सं. ग्रन्थनाम लेखक नं. शास्त्र विषय पृ.

११. शिवदृष्टि वार्त्ती: उत्पलदेव. १६८ भक्तिशा. ७५
वेदान्तशा. ७.

१२. वेदान्त सार: " " ग्र. ५

१३. पञ्चीकरण वार्तिकं अनन्तराम शास्त्री. " " १६

१४ बाल बोधिनी. श्री शंकराचार्य. " " १८.

२ १६. महार्थमञ्जरी. महेश्वरानंद: भक्ति शा. " १६

" १५. वेदान्तसार: सदानन्द: वेदान्तशा. " १६

१७ ईश्वर प्रत्यभिज्ञा हृदयं राजानक क्षेमराज: भक्तिशा. " १९

वेदान्तशा. " ९

१८. षड्दर्शन विचार: भक्तिशा. " १२०

१९ ईश्वरप्रत्यभिज्ञा विमर्शिनी राजानक अभिनवगुप्त. ———



पत्रे २६५ श्लो ८५००

१४८०

शिवसूत्रः १ वेदान्तसारं २ प्रत्यभिज्ञाहृदयं ३
षड्दर्शनसमस्तानि ४ महार्थमञ्जरी ५ प्रत्यभिज्ञावि
[illegible] ६ संवत् १९८० गतवर्षाणि २५

श्रीगुरवे शिवाय नमः

ॐ स्वस्ति ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीरस्तु ॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

वक्ष्यते । उक्तञ्च [illegible] वागिन्द्रियस्यापि [illegible]ः [illegible]
मः ॥ कर्मेन्द्रियैर्व[illegible] [illegible]
[illegible] शिव [illegible] । [illegible]
कथितं [illegible] उक्तं [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] शिव [illegible] ॥ ॥ यद्यपि
[illegible]
[illegible] वागिन्द्रि-
यस्यापि [illegible]
[illegible] वागिन्द्रियस्य [illegible] । [illegible]
शिव [illegible] । कर्म[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] । [illegible]
[illegible] शिव [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] शिव [illegible]
ति ॥ ॥ ॥

इति श्रीमद्भट्टकल्लटविरचितायां शिवसूत्रवृत्तौ
द्वितीयमाह्निकम् ॥ ॥ ॥ श्रीगुरुच
रणकमलेभ्यो नमः ॥ ॥ ॥ आत्मा चित्तम् ॥
चित्तः प्रसृतीविकल्पस्वभावं बुद्धिपर्यन्तमात्मनः
नः पुंसोऽभिमतम् । तथा, दोषः, यथा विक
ल्पितेभ्यः शिवमसृजत् परमेश्वरः पर
मेश्वरात्मनो विश्वमात्मभिरेव इति ॥ ३ ॥ ॥ ॥
ज्ञानं बन्धः प्रत्यक्षेणोपलक्ष्यते । यथा
शक्तिसिद्धिः स्वभावतः शक्तिस्वभावतः ॥ ॥ लिङ्ग
विशेषसंवेदनस्य कलेर्भाति वेद्यं विभातं तत्त्वम्
पाशबद्धं प्राणं तत्त्वेन । ततः प्रमाणशक्ति
मतो भवति शक्तिमत्त्वाद्वित्वं ततः सूक्ष्मं विश्व
मयं विश्वमात्मभावं तदनन्तमनन्तं तत्त्वं वि
श्वमयमिति । यतो भेदेनैव ततः पाशबद्धं देहेन्द्रिय
शरीरं किञ्चिज्ज्ञं कर्तृत्वं दृष्टम्, ततः मलः प
रिच्छिन्नो यः सुखदुःखमोहात्मकः प्रत्ययः
तत्त्वसंवित्त्या स्वभावः शिवः शक्तिसिद्धिर्विभुत्व

मेवतु विशेषाङ्गं श्रीलिङ्गं किमिहोच्यते शिवः [illegible]
[illegible] लिङ्गं [illegible]
[illegible]
[illegible] ॥
उवाच [illegible] शिव [illegible] ॥ ॥उवा
श्रीलिङ्ग [illegible] शिव [illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ ॥ शिवः [illegible]
शिव [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ॥ [illegible]
[illegible] शिव [illegible]
[illegible]
[illegible] शिवः [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ ॥
[illegible]

श्रीशि
[illegible]
३१

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

फलमभीप्सितः ॥ क्रियाया [illegible]
नीय [illegible]
[illegible] विधिर्विहितः ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

पश्चात्पद्यं प्रकाशिकाश्रितिः श्रीसन्तानः [illegible]

प्रवेशस्तेनमुक्ति ॥ ॥ अथप्रमुक्तिप्रकाश
मायापरुवतल्लयः तत्रैक्तित्रावतीतद्वन्न्द्व
स्तत्रवचकुत्रयादित्वा ॥ अथ [illegible] तत्रप्रस्ना
मतस्य [illegible], प्रिन्नुप [illegible] परमेश्वरिवको
गयीरभुतः ॥ ५ ॥ शिवैकत्वात्मतत्र [illegible]
भयमंभ [illegible] याव [illegible] त्रावमाये
तावत्स्वे [illegible] पमिवता, उभय [illegible]
कमयितस्य [illegible] पमयि [illegible] पक
याकथमसु [illegible], उभयादि [illegible]
यर्यदमितिअकल्पा [illegible] भवमन्तान्तु प्रक
मः सान्वयक [illegible] रभक [illegible]
[illegible]

[illegible] भवत, उभकेशिप्र [illegible], अत्र
[illegible] भक्ते [illegible] कमरे, [illegible]
श्रीमि उत्तात्व [illegible] ययेप [illegible], उभ [illegible]
व६ शिकुशिता, [illegible] अयामुक्तित्रविशेष
३ याम्रपदेयाप्र [illegible], पश्चावक्ष्याये

प्रः प्रत्येकमित्येव सुखदुःखभावप्रकाशमानत्व
प्रकाशमानत्वात् तद्वेदनम्। संवेदनस्यापि तत्त्वे
क्रिया। तत्त्वभावेन तत्स्वरूपमाभासितस्यापि
तत्त्वेन, तस्मिंस्तु भवतीति, तत्त्वस्य स्वरूपं
क्रियते येषाम्। स्वसंवेदनत्वेनाभितत्त्व
स्वरूपत्वेन यत्पदं परिगमनीयः। द्वितीयस्तु
तत्त्वस्वरूपमतोऽपि परं तत्त्वस्यापेक्षः।
स्वतन्त्रविकल्पविषयाभावे प्रत्यक्षमप्रका
शसंवेदनस्य च स्वप्रकाशमयपदार्थावि
भासनमित्यस्मिन् प्रत्येकं स्वयं तत्त्वेन तुल्यम्।
अस्मात्, स्वस्यैव भासितत्त्वात् तत्त्वेन वि
ज्ञानापरिकल्पनात्, स्वतन्त्रस्मृतिसंभव
संवृत्त्यादिस्मरणप्रकाशमतत्त्वानां विरुद्धं
च परस्परं तुल्यम्। संवादविचित्रतापराव
स्थायामेव भासमानस्य स्वतन्त्रत्वं स्वतन्त्रमाया
मयिमात्र सा ज्ञानात्मिकेति तत्स्वरूपस्मि
न्नसंवेद्ये स्थिते ॥ ५ ॥ यत्परं तत्स्वस्यापि

तुरवस्यैस्य तुवस्तिति, यावद्भग्नरुङ्ग [illegible]
[illegible] ॥ श्लोके वल्ल[illegible] [illegible]
उदाहृतं॥ ॥ एकैवल्लं पराय [illegible]
वत्तवेवं द्वियमे, यावत्स्य परा वस्त्व यभवि
मच्चविकल्प [illegible]
[illegible]
[illegible] वस्तु [illegible] पर [illegible] वस्तु [illegible]
[illegible] वस्तु [illegible]
[illegible] पर वस्तु, उदा [illegible]
[illegible] विमुक्ति [illegible] पर [illegible]
[illegible] विमुक्तिः उत्त [illegible]
[illegible]
[illegible] विमुक्तिः वस्तु [illegible]
[illegible] पर [illegible] श्लोकै वल्ल [illegible]
[illegible] उदाहृतं
[illegible]
[illegible] निश्च [illegible]

ॐ अथ ज्योतिः शास्त्रे कालपरिच्छित्तये तस्य प्रथम
त्वात्, तत्रैव तावत् मुक्तिः कालः पदार्थस्तु
परमाणुपरमाणुतत्वेन संस्थितो देवो वा
त्रिसूत्रः, तत्र भावान्तराणां कालविभागसं
ज्ञः, अथवा, भावेऽत्रापि परापरत्व
रूपत्वम्, विशेषस्य कालविभागोपि स्थिति
उत्पत्तिविनाशरूपः, तत्र तेन तु ततस्ति
रूपम् ॥ ॥ अथ सूर्योदयतत्स्त
कदम्बकालतः प्रत्यक्षं वेदसमयेषु
संवत्सरत्वम् ॥ अत्र कालोऽपि तत्तत्सूक्ष्मविभ
जप्रसरोऽस्य तु, विमलीकृत्य प्रसङ्गान्तरात्
न वक्तव्य ॥ तिथ्यादिकं प्रस्तुतम् अत्र च
क्रियाविलम्बितं ॥ ॥ अथ सङ्क्षेपात्प्रमाणं
रूपं लक्षणं तदेव निमेषप्रभृति कालस्य
[illegible]
[illegible]
[illegible]

तद्रूपत्वेव, किन्तु मायामन्त्रितमा[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] ॥ ॥ ग

[illegible]

तत्र भूमाङ्गपञ्चकं विभिन्नप्रयत्नतः॥ ॥अभि
[illegible] तस्य पञ्चत्वं
[illegible] ॥ केवलं [illegible]
[illegible] केवलम् [illegible]
[illegible] केवली॥ [illegible]
[illegible] केवली॥ ॥अभि [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥अभि
[illegible]
श्रीमि [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

गिरां मिश्रया पद्मरागानुरूपैः पपात्त्र्या रसाभि
मानं च किञ्चित्कृपामीशं च वितापूर्णैः ॥ उपायन
वक्तिश्चैव तथात्रैव स्पन्दते ॥ ॥ योगिनां मि
श्रुभाते ... गतिरूपाणि रूपपति
ह्रियाऽऽह्नेत्र माभात्रेतत्तेन धः ; रसाद्भाव्य
सितेषां तत्रसीनाम् च किञ्चिद्रूप रस्मिप
रमन्त्र स्फुरित्कृतम्, तद्रूपं तत्पक्षात् फिटति
मीत, तथाभावसिद्धमात्र मेव विज्ञानरूपं
सम्भूतं, स्तुतम् अस्मद्वस्तु लक्षणम् ॥ ॥
प्रत्यक्ष सिद्धं ते नवान्धीभूते यागत ; तत्रसि
द्धा अनुरूपं तत्र प्रत्यक्षा उक्तं ... ॥ ॥
कामसिक रणधाति योगात्सुन्न तत्ता कः ; पूर स्फु
रत्ने दृश्यते, तत्रनाक्तिसैव कल्याणम् ,
तच्चं सेनाबन्ध ... सीमुक्तं च मनः ॥ तथा
तत्रसौ ... सियो मिश्रं तु पाणानि, पंचत्वमूलं
श्रीमि भीरुसाम भवनं मुक्तपर्याय मात्र, तत्र सताम
वद्द प्रयुक्त्वा तत्रं तत्रैव ॥ ॥ तत्र मच व पूर्व
०५ यथा सा मिवत्कृपतः ; नीतु यत्र रसि तत्रमि

कर्तुं शिवत्वमत्र कथम् । तथा [illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ इति श्रीशिवसूत्र-
विमर्शिन्यां [illegible]
श्रीमत्क्षेमराजविरचितायां [illegible] प्रथम-
[illegible] ॥
[illegible]
[illegible] ॥ ॥ [illegible]
[illegible] शिवत्वपद [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] शिवत्वपद [illegible]
[illegible] शिवत्वपद [illegible]
[illegible] शिवत्वपद [illegible]

श्रीशि
[illegible]

[illegible]

[illegible]

03

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

९३

श्रीशि
व सू
९८

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

श्रीमि
वस्तु
९७

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible] [illegible] 70

[illegible]

[illegible]

पद्वेनमस्थरमेभद्दुपद्दुकदुमतुदवभुत
द्विमिष्टुमपडभाड।नतुमस्थडद्दवदवमध्य
मशिविमेपद्ध्वभ।उपद्धाद निम्सुकेनतुन
तमडनुदीकय भेवभेवविमिष्टुमडभो
द्वितुं भूमद्धक्रुमिगडंभत्तुतपक्रुमिगाड
नंमसमक्रनं मडुवागिद्धियश्कमस्तिदवागि
द्वियेदि मप्यपमलवमिक्रुभ सद्वक्तुपमडक
डुडुप:पद्विमभदक्रुडमय:पमस्त्वापाह्र
द्रक्रविदभवडमहुड,मस्विउमडमीह्य
ह्रिद्धयम॥ ॥उडवडुपयवद्दव
पमनिडु॥किष्पुउपमितुनमस्तिद्धुमिन
मसम॥ ॥ञ्चपपाभडुमक्कभ्यपधवं
ह्रद्वपद्धुनिवपमर्येगेनभडं,उपमस्तीक्त
ग मोदिउयंपम्तिक्ष्मविवंविमपमय
वत्तुकमिउभ॥ ॥उडुपायदुरुंमस्ती
पढेभुपायड॥ ॥किष्यस्वदयपुउमउ
डुडुउपायमद्दुपवद्दवभ मीपमेपिह०
नेपायद्दुउडभूमद्दुमिडुयंमेवभमतभुत

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

श्रीमि
वद्य
८०

श्रीमि
वस्त
70

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ किं शिव [illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ ॥श्री लिङ्ग शिव [illegible]
[illegible] शिव [illegible] नमः शिव [illegible] शिव [illegible]
[illegible] श्री लि [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥
[illegible]
[illegible] नमः [illegible] ॥ ॥
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible] [illegible] 71

[illegible]

[illegible]

श्रीशि
वसू
१०

नतश्चैतन्मूर्धेः ॥ अथर्वणमनयेत्तेनुर
तकिं प्रतीयते । विनेयान्मनोविनस्कृत्य ति
नेपथ्युक्तं । तत्रैतं विनयमुक्तं वचि
रुद्रुतं ॥ अभावत्वेविनेय ~ कथमकस्यै
तितं ॥ ॥ अथ नभावेविण्ड्वाभितुन्न
भंभभावविषयनशीर्षं जीयते तथभावं
विनः यथानुवर्त्मनयेत्तं नेवस्कृत
ककथयभिभुजेप्रतीति, नतश्चैतन्
मूर्धेः तभुतं मन्ववेप्रामवप्रतीतेः क
एककेप्रणगरु तनकम्विहृतिगः अथ
पेनस्त्पि नभावत्वे पगते, किं अथर्वण
नयेत्तेनुरत भूमहभूतेपत्तु पाभूतीयते,
विनेयान्मनोविनस्कृतेः, अपित्वनेवस्त
हृवतुत्तं अथर्वभूतवभमतः ~ भुपकतं
भपाभूभत विनेयान्वोतकम्निमिपिर
स्तुततिकन्त्वणेय । नकम्निमनुत

श्रीमि
वसु
७०

[illegible]

28

ॐ नमः विष्णवे ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ ७ ॥







नमः शिवाय॥

श्रीगुरवे शिवार्यै नमः॥ यदज्ञानप्रभावेण दृश्यते
सकलं जगत्॥ यज्ज्ञानाद्विलयं याति तस्मै ज्ञानात्म-
ने नमः॥ आचार्यस्तु द्विधा शब्दं प्रमाणं सामान्य-
ज्ञानाय मन्त्रशास्त्रार्थं विचारयामः॥ तत्र प्रथमं
शब्दं शब्दान्ति, श्रयमाद्य शब्द, लक्षण शुद्धं तद
शुद्धतः॥ अयं ज्ञायं प्रकर्षे, यज्ञाश्रमादि तेऽत
कर्मणां विदित। स्वल्पं प्रति स्वल्पं तच्च तत्र मा
त्रिकाः दत्तमव बुद्ध्यापि सत्त्वात् ज्ञानं, नैपपत्तौ
प्रत्यक्षं। तत्र पदे पदार्थं परिज्ञानार्थाविति।
यतः परिणोक्तं प्रत्यक्षं ज्ञानात् सिद्धं यत्
पदानि, तत्र समीहितानि, पदार्था नाम, कार्य-
कलापात् सिद्ध विधिः॥ तं पदसमर्थं संज्ञितं
देहेन्द्रियमनो बुद्धि प्राणादयो न सिद्धः। सम्प्र-
त्यादि निर्दय प्रविसिद्धः। अकर्तादि ज्ञायत
वेदा॰ प्रविसिद्धः। कामात्तु तत्त्वं विसिद्धः। उक्तं,
मा॰ ० अविद्यावन्तं। विपरीतमतं। अपरीयन्तं। वि
नष्टं। धर्मविकाराः। अमन्यायापि पा

धस्मिं किं सिद्धलक्षमर्त्तनि, ततोधस्तु कृत्यः॥
कृष्णयं मांस सिद्धि महत्तथ पङ्क्तिसाः । ता
तु प्रोक्त कृत्वा ठि महत्व मनि, एतन्नासिद्धा नरुय
विसिद्धुं पाञ्छि कानि दैवाविं तोतिकृता पतस
तुष्टिकृत्यमानंदकृ तु तुष्ठि मानवता । सिद्धिः
प्राप्य पापहंसं जनस्का दिश्व धापादीनव
कृत्यमिदं स्वापी कृतीत प्रतीय भावः । प्रत
ताक्षा कृंपन्नत्ववाभूतः । यियंविद्धनमयः
प्रालब्धकृत्तदृलोतिः प्रतथः । यियंदहिलहि
प्रतथः । ततञ्च वस्तु रवस्थैविद्धपितं, नदेह
यादिविलक्षणः । उक्तश्च साङ्कुंपन्नस्थले
भूतः । तो तवात मानिकृत्तानि एयतु, सद्वैसो
भूदमरु भूमौतु । भुङ्क्ता तदमेकारभूमौ
तु नामेदमौ इम दमौतु, उम भूमौतु ।
उदक्तात दमरभूमौतु । तदानिवाद्धैः प
तिपत्रं, सचक्षु वे सचस्त्रावकं, सचान्त्र दासिद्धं,

सर्वसूक्ष्मत्वं, सर्वपालयितृत्वं, सर्वसंदर्शकत्वं, इत्या-
द्यनन्तत्वमादिविशेषणविशिष्टं । [illegible]
[illegible]

क्षपरपाठे क्षरद्धिं विदाय, त्रिकाले [illegible] तीर्येण
पाठे द्वद्विरवतीति, तद्वै सत्त्वमिति द्रष्टं। तत्सर्व
द्वियमात्राम शुद्धर [illegible] कलकमकद्रवं नाभी
तिपूर्वेण: मात्राम: तत्पयोगात्राम: अरश्री
पातृशुभि ठालन मद्धतमवीर मनमादर्कवंश
ज्ञाशुक्रमवद्धचगतशुद्धाद मितितमदन्दवर्यं
गात्राम:। ततसेपवेण: पपद्रुमवाप्य पदयत
श्लोक तथापि जमिदन्नगतत्ष्टाम सलिलवद्धिं नेव
नेदं सलिलमिति सलिलवद्धि हरयति। तस्माद
द्रा: परिहृत्य परिहृताम:। तद्धमा पूर्वजातं तत
मेव:। श्वस्तेदान्यित्वि तथ्विर्त्र शुद्राश्रीति किंपृमा
न्मा। नाद्विद्विड्रपल्लद्रुत। मयमंतल्लेके
पृमिद्रु:। इष्टं इहिंद्र उति नैवेदं शरीर माद्रत
पादिमज्ञत। पपदिवत। पद्रुद्रपादिमद्व
ति सतंतत्दसमितिमद्रपत्रशुद्धानठवति, तुपरद
वेसा न्मात्मनद्रत। पति · · · · सर्वालिकर
२२ न्तवमेवपमद्रत। शरीर शुभे तदंना श्री: तप

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
भवति। मातृपितृसंयोगकाले वायुवशात् [illegible]
[illegible] प्रवेशः। एकरात्रोषितं कललं, द्विरा
त्रोषितं बुद्बुदं [illegible] त्रिरात्रोषितं [illegible] रात्रोषितं मां
सं, पञ्चरात्रोषितं [illegible] रात्रोषितं [illegible]
रात्रोषितं [illegible]। अष्टरात्रोषितं [illegible]। नवरा
त्रोषितं [illegible], दशरात्रोषितं [illegible], प्रथमा
से [illegible] शरीरं भवति। द्वितीयमासे शिरो
[illegible]। तृतीयमासे [illegible] भवति। चतु
र्थमासे [illegible] पञ्चममासे [illegible], षष्ठ
मासे [illegible]। सप्तममासे [illegible]
[illegible] ममासे [illegible]। [illegible]
[illegible]

वेद तुसा ५

ति, सर्वं पाञ्चभौतिकं शरीरम्। संयोगकाले शुक्रशोणित
प्रभावात्। वक्ष्यामि द्विदोषौ। आत्मप्रसंगकम्। पञ्चभूत
तत्त्वेनातिरेकत्वात्। पृथिव्यप्तेजोवाय्वाकाशाः।
पञ्चमहाभूतानि, आत्मा सूक्ष्मोऽन्तः समवायः शरीरं
भवति। यत्कठिनं सा पृथिवी। यद्द्रवं तदापः। यदुष्णं त
त्तेजः। यत्संचरति स वायुः। यः सुषिरः स आकाशः।
पञ्च बुद्धीन्द्रियाणि। श्रोत्रं त्वक्चक्षुर्जिह्वा। घ्रा
णं च तुः। ... पृथिव्यां ...मिति। पञ्च
विषयाणि। शब्दस्पर्शरूपरसगन्धाः ... शब्दं
विज्ञीयन्ते। ... पञ्चेन्द्रियाणि ...
...मिति। वाक्पाणिपादपायूपस्थानीति कर्मेन्द्रि
याणि। तेषां पञ्चविषयाः। वचनादानगमनवि
सर्गानन्दाः। एतानि महाभूतैरुत्पन्नानि। ...
...। ...पाणिः। ...पादः। ...पायुः।
पृथिव्याम् उपस्थं। ... वचनं, पाणिरादानं, पादं वि
हरणं पायुरुत्सर्गं उपस्थम् आनन्दं। ...
...। अतः पृथिव्यादिभूतानि ॥

दयपद्ममावर्त्तु। अपनासिकैकमत्तिः। अपनि
नाठिकमलमावर्त्तु। वित्रङ्गविमर्त्तंकिठवति।
श्रीरश्मिमावर्त्तु विक्रमन्तंक्रियते। उदानकुच्
मावर्त्तुत्रपानादिद्रियांक्रियते। समानस्थ
वमावर्त्तु स्वरस्थस्यनादिद्रियांक्रियते तु
ध्वनिरस्थितः विद्युः शुद्धः सद्यः आकाशादि
श्रुतेश्वरत्रादिक्रमेण भूतस्थादिवर्ग्यठेमेष
मुष्टिहवक्तिः। शुक्लसमवक्रत्तानित्यालयि
त्रा। तस्मिन्नेव तस्मिन्नीश्वरंलिङ्गितंठवति। शुक्र
ममपलायितं तत्रतस्मिन्नीभवण्तठवति।
शुक्रशरीरस्य तु शरीरात्तु रक्षाणिः। दिशा
तुरस्थितिंठवति। नेत्रस्य भाद्रः सद्यगत
स्थितं। दिशात्तुर अधुनावदिकलवाद्रुति।
एकस्मिंस्तु शरीरे नेत्रे श्रोत्रे शरीरात्तुरक्षा
वक्तितः। शरीरभेदेन भेदः एतन्नस्तकमिति
येतत् नठवति। शुतिकेकपाशेनस्थितिंठवती
उपदेनशुतिविन्दं नक्रिशिद्धं ठवतियस्य पंचत
शुक्लं यस्य पंचतस्य सद्धं तस्य द्रुतिं विद्धत

[illegible]

इये॥ बुद्धीन्द्रियाणि पञ्चैव पंचकर्मेन्द्रियाण्यपि। [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]॥ इति मात्रा[illegible]
[illegible]: प्रकीर्तितः॥ [illegible]
[illegible]
[illegible] पंचैते कीर्तिता [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]: प्र[illegible]॥
[illegible]
[illegible]॥ इति मा
[illegible]: प्रकीर्तिताः॥ [illegible]
[illegible]॥ [illegible]
[illegible]॥ [illegible]
[illegible]॥ [illegible]

पंची
कवं
१

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]॥ उक्तं च [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]। [illegible]
[illegible], नैमित्तिक[illegible]
[illegible]
[illegible] प्रमाणा। [illegible]
[illegible] आचरणानि, [illegible], [illegible]
[illegible] आचरणानि [illegible], [illegible]
[illegible] आचरणानि, [illegible]
[illegible], नैमित्तिकानि, [illegible]
[illegible], [illegible] आचरणानि॥
[illegible], उपासनानि [illegible]
[illegible]
[illegible], [illegible]
[illegible]। उपासनानां तु [illegible]। [illegible]
[illegible], [illegible]
[illegible]॥ उपास[illegible]

ल्पं दत्ते विद्ययामृतमश्नुते ॥ उक्तानि सूत्राणि ॥
विद्यैव सिद्धिकेवेन पश्यता कं सा वा तु व रलौपि
तु लोक स तु लोक प्राप्तिः । कर्म उपि तु लोकं वि
तु या देवलोक उक्ता दि सूत्रेः ॥ आत्मना नि वि
द्या विद्वद्वस्तु विवेकेन प्रकृतेः ब्रह्मज्ञान विराग
समदमादि षट्कसम्पत्ति मुमुक्षुत्वानि । विद्या विद्य
वस्तु विवेक उक्तः । इदमेव विद्वद्वस्तु । उदय इन
पिलम विद्ये सितविवेकस्य । तदि कर्मणं
श्रेयो इ नादिरूपं विद्यादि विषये न पांक्तक्ष
त्रय तु विद्वद्वत्तः । तु यद्यि कर्म समप्रत्यादि
विषये न नाम विद्ययाप्तेः हि विद्वद्यु विव
ति विद्या प्रज्ञा ब्रह्मज्ञान विरागः । समादय
स्तु । समदमोपरति तितिक्षा समाधानश्रद्धाः
सम उक्तः । श्रवणादि सूत्रेति विद्यु विषयत्वे
न सिद्धिः । मुमुक्षुत्वं इत्यादि उक्तं ति विद्यु वि
वेद तुरीय ६६ षयत्वेन सिद्धं । सिद्ध तु उपायो मुक्तेः ति विद्यु
विषये तु उपरमश्च प्रयाति । अथवा विदि
तं कर्म उ विविदिषा यज्ञाः । ति तिक्षा सी

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

न्तु । यस्य चन्द्रः सविविक्ति दिक्षु तस्य । श्रीसूर्यं
समधिष्ठि [illegible] वपिलकार्ण्ड [illegible] मरीरमा
[illegible] सव [illegible] भयकि
सः सर्वपरम [illegible] ल [illegible]
पंसलय [illegible] ॥ यथा वन [illegible]
ति स्याय [illegible] रूपदेशः । यथा
कालिला [illegible] लामीति ।
उथा [illegible] इत्येकरूपदेशः
देशः । [illegible] यत्यादि [illegible] यंयते इत्
दिक्षु तः ॥ [illegible] समधि [illegible]
समधिष्ठिरूपदेशः ॥ [illegible]
उयामलि [illegible] । [illegible]
[illegible]
[illegible] । [illegible] । [illegible]
[illegible]
[illegible] । [illegible]
[illegible] मरीर [illegible]
[illegible] भयकि सर्व [illegible] परम

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

दृशिस्वरूपं गणेन्द्रपभं परं मनसा द्वितं तत्त्वमेकम्
द्वयम् । सकलेपकं सचराचरं यदद्वयं तद्देवमाद्यं
सततं विश्वतः । दृशिस्तु ॥ स्फुरद्दमानन्दमवि
त्रियाद्धेतोरभ्यस्तिक क्रियाद्विषमः स्वभावतः ॥
प्रवृत्तिर्वृत्तिमत्त्वमस्य सततः स्वप्रकाशतत्त्व
स्वरूपनिवृत्तेः ॥ निर्विकल्पत्वं तु ॥ दृष्टदृष्टा दिवि
कल्पविरहितस्तत्परत्वात् द्वितीयवस्तुनि, तद
काराकारितत्वाभ्युत्थितं च तत्त्वतो कीदृश
स्वरूपं । तदालम्बनाकारितत्वात्
वस्तुसमुल्लासात्वतत्वमवतु स्वद्वितीयवस्तु
काराकारितस्य तत्रस्वरूपमता द्वितीयवस्तु
भावे भवत्वमेतत् । तत्स्वरूपं निर्विकल्पमभा
स्फुरत्तत्त्वं तदनस्तमनवधि । तत्परत्वात् दृष्टत्वम
भावे पितत्त्वस्वरूपमात्रभावे तत्परत्वं दपप
तः ॥ स्फुरन्ति । यमनियमासन प्राणायाम
प्रत्याहारध्यानसमाधयः ॥ तत्राहिंसा
सत्यास्तेयब्रह्मचर्यापरिग्रहाः । यमः । सेव्यास
त्पक्षतपः स्वाध्यायेश्वरैकाग्र्यप्रणिधानानि ॥

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]

स्तुमंसोविज्ञप्रत्यक्षतद्विज्ञानं कस्मात् पि
स्तत्त्वस्मात् पिनाम: तत्त्व: कालस्तु हि:॥
तत्त्वविज्ञाननिर्विकल्पकविकल्प: संप्रत्यय: यथा
निर्विकल्पकमेश्वति विश्वस्तुषासद्भुतस्क्रम
विकल्पकदृति: । तदद्भवदासद्भूमेनिर्विकल्पक
मविहितमिति विमर्श: । तत्र निर्विकल्पं निर्विकल्पकी
कृतं यददनमापायितद निर्विकल्पषायद:।
स्तु क्रियालद्भं निर्विकल्पमिति निर्विकल्पनिर्विकल्पक
वेद: ॥ तत् तदाभस्थलक्षणविरामः । की
दृशोविरा ग: । सुत्र देश्वस्थपरस्तु यत्र भन
भिसवषस्तवस्तं दरि तत्र भिव तवति । तद
ववैराग्यमिति तदाभवद्भलक्षणविराग: ।
तत: स्मरणादिसंभवति: । यस्य विषयेष्व
तु: कवलनिर्विकल्पकं स्मृतं समातु: । तस्य वि
षयेष्वविदिक्रमंसवषा निर्विकल्पक: सद
तस्य तु यथा विषयत्वलनिर्विकल्पक
तु: ॥ तस्य तु यथा विषयत्वल निर्विकल्प
तुतं सतु पवतु: । यस्य स पक्ष्यपवय
लावालावलयालयस्तुति निर्विकल्पसव

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

श्रीगुरवे नमः ॥ ॥ नमश्शिवाय सततं पञ्चकृत्य
विधायिने ॥ चिदानन्दघनस्वात्मपरमार्थाव
भासिने ॥ ॥ शांकरोपनिषत्सारप्रत्यभिज्ञामहोद
धेः ॥ उद्ध्रियते परं सारं संसारविषशान्त
ये ॥ ॥ इह ये सुकुमारमतयो ऽकृततीक्ष्ण
तर्कशास्त्रपरिश्रमाः शक्तिपातोन्मिषितपार
मेश्वरसमावेशाभिलाषिणः कतिचिद्भक्ति
भाजस्तेषामीश्वरप्रत्यभिज्ञोपदेशतत्त्वं मनागुन्मी
ल्यते ॥ तत्र स्वात्मदेवताया एव सर्वत्र कारणत्वं सु
खोपायप्राप्यत्वं महाफलत्वं चाभिव्यक्तुमाह ॥
॥ ॥ चितिः स्वतन्त्रा विश्वसिद्धिहेतुः ॥ ॥
विश्वमिति सदाशिवादिभूम्यन्तम् तस्य सिद्धिः निष्पत्तिः
प्रकाशनं स्थितिः परप्रमातृविश्रान्त्यात्मा संहा
रश्च तत्र परा शक्तिरूपा चितिरेव भगवती स्वतन्त्रा
नुत्तरविमर्शमयी शिवभट्टारकाभिन्ना हेतु
रस्याः । अस्यां हि प्रसरन्त्यां जगदुन्मिषति व्यव
श्रीरं [illegible] तिष्ठते । निवृत्तप्रसरायां निमिषति स्वानु
भवश्चात्र साक्षी । [illegible]

[illegible] शीलयति । तच्छील
[illegible]
तः प्रकाशैकात्म्येनावभासनम् ॥ ७ ॥ अथ
[illegible] ॥
[illegible] ॥ तद्विश्वं
[illegible] ।
[illegible]
[illegible] । तथा [illegible] शिवतत्त्वं [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] : [illegible] : परमेश्वर [illegible]
[illegible] : [illegible]
[illegible]
[illegible] मन्त्रेश्वरा: । वि
[illegible] । श्रीमत् [illegible]
[illegible] : [illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ १ ॥
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible] [illegible]
[illegible] [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] [illegible]
[illegible] [illegible]
[illegible] [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

२३६

[illegible]

३

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
श्री [illegible]
१८ [illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

शी २३ [illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
श्रीः [illegible]
२८ [illegible]

[illegible]

श्रीः ५५

ंगा स्रोतसि

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

कुस्सबाभवन्ति पिपासा गंगा स्रोतसि
निमग्नस्य

स्रोतसि निमग्नस्य





श्रीगणेशाय नमः ॥ ओं [illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ १ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ २ ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible] ३
[illegible] ॥
[illegible]
श्री: [illegible] ॥ ४ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

श्रीः [illegible]

[illegible]

𑆮𑆴𑆠𑆳𑆮𑆴𑆠𑆩𑆴𑆤𑇀𑆢𑇀𑆫𑆱𑇀𑆠𑆶 ॥ 𑇕 ॥ 𑆪𑆅𑆤𑇀𑆢𑆱𑆴𑆫𑆶𑆲𑆮𑆴𑆮𑆴,

𑆢𑆝𑆱𑇀𑆪𑆳𑆯𑇀𑆮𑆴𑆠𑆝𑆮𑆴𑆰𑆛𑆂 ॥ 𑆇𑆢𑆱𑇀𑆩𑆁 𑆮𑆴𑆮𑆑𑆴𑆝𑇀𑆫

𑆢𑆪𑆥𑆮𑆴𑆱𑇀𑆥𑆢𑇀𑆫𑆩𑆳𑆲𑆱𑆳𑆤𑇀𑆠𑆶𑆳𑆤𑇀𑆠𑆳𑆱 ॥ 𑇖 ॥ 𑆥𑆢𑇀𑆫

𑆬𑆾𑆱𑇀𑆩𑆮𑆴𑆯𑇀𑆮𑆥𑆴𑆫𑆱𑇀𑆠𑆶𑆱𑇀𑆮𑆜𑆩𑆮𑆯𑇀𑆖 𑆱𑇀𑆠𑆶𑆝𑇀𑆑𑆼𑆲𑆸𑆢𑆪𑆼 ॥ 𑆱

𑆑𑇀𑆫𑆮𑆴𑆰𑆮𑆼𑆥𑆤, 𑆇𑆮𑆨𑇀𑆫𑆁𑆱𑆳𑆫𑆠𑇀𑆪𑆪𑆱𑇀𑆩𑆢𑇀𑆨𑆶𑆬𑆾𑆑𑆂 ॥ 𑇗 ॥

𑆩𑆳𑆬𑆴𑆤𑇀𑆣𑆱𑇀𑆮𑆑𑆠𑆮𑆤𑇀𑆤𑆴𑆱𑆴𑆬𑆴𑆠𑆼𑆮𑆴𑆬𑆩𑆱𑇀𑆠𑇀𑆫𑆳𑆥

𑆬𑆾𑆥𑆱𑆳𑆒𑆠𑆴𑆜𑆳𑆠𑆴𑆬𑆾𑆑𑆴𑆑𑆥𑆳, 𑆩𑆲𑇀𑆱𑇀𑆠𑆶𑆑𑇀𑆫𑆾𑆠𑆼

𑆥𑆴𑆯𑇀𑆮𑆑𑇀𑆫𑆠𑆼𑆱𑇀𑆠𑆶𑆢𑇀𑆩 ॥ 𑇘 ॥ 𑆇𑆢𑇀𑆮𑆴𑆝𑇀𑆬𑆠𑆴𑆫𑆑𑆱𑆴,

𑆬𑆾𑆑𑆬𑆾𑆑𑆱𑇀𑆩𑆨𑆕𑇀𑆓𑆬𑆫𑆢𑆵𑆥𑆂 ॥ 𑆮𑆴𑆨𑆱𑇀𑆮𑆢𑆱𑆳𑆯𑇀𑆮

𑆥𑆴𑆩, 𑆇𑆢𑇀𑆢𑆶𑆩𑆬𑆳𑆬𑆴𑆠𑆼𑆬𑆮𑆴𑆰𑇀𑆟𑆶𑆫𑆂 ॥ 𑇙 ॥

[illegible]

[illegible]: [illegible]

रः ॥ १०० ॥ पूर्णिमापर[illegible]: ५ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible]

[illegible] देवः ॥ १०१ ॥ [illegible]

[illegible]: ॥ [illegible]

[illegible]: ॥ १०२

[illegible]: [illegible]

[illegible] देवः ॥ द्वितीया [illegible] द्वितीय. [illegible]

[illegible] ॥ १०३ ॥ [illegible]

स्वठवच्छलोकस्य वद्दरः॥ स्मरस्मांमांहृद्विं
यहृगता सापन्नविनिसुधा विहो॥ १८॥
कस्मेस्वठस्के उत्तस्यतीर्विकलस्मिल्लदनि॥
भायेतिलोकपतः परमस्वरूपमाद्वितीयमतिः १९॥
मवकाः मवल्लः प्रकृतिसिद्ध प्रमत्तस्य सुविप
रीतः॥ उवमदृमेयातिभूतः ठवतु पर्यन्तस्तु
यः॥ १२॥ यस्य धविश्वनाकेमेन्द्रधःसु
हस्संविस्फुरः॥ वलूकपरिस्फुमयीउस्स
सारूपिश्वरस्य भवतु॥ १७॥ सूर्वत्तियामा
यानंतः उनांमद्भुवलेसुमसूत्रोवानाम॥

[illegible] विठपाव अथ्यं द्रुं स्तु उविडिजाव्रु वीस

उ:॥ ०२॥ कल्लिलाय्र मानानि मनस्नुनयाज्ञ

[illegible] [illegible] क्रव ञति ॥ तुकदती स्तुं, उवा [illegible]

तुं म स्कृर भुदयतु ॥ ०७॥ रुमयज्ञि उथ वि ठि,

चिपया लिकि विश्वल्लि ठवउ। ल्लुवक्रियमि

पथ, विल विलिगिलारविल्लुनयथ ॥ ७० ॥

ठवक्रि करञति पत्रु, कम्रयमा विलिका

बस्तु। मनउ थ्रं यलिव ल्कत्रि न छलि

पद
उम
उ

ठम ॥ ३० ॥ विश्रिरुपनि स्तुठमि, गत्रु

रथांनविमयस्त्रीवि [illegible] लि॥ पक्रवपि [illegible]

ऽऽक्षश्रीशठिर्देवैर्व्रतिभिः॥ ३३॥ सुरनम्र
द्रुमवत्कामादिहृद्गमस्तोत्रमिमपरमसप्तु॥ गुरु
पिश्रुतवप्रगश्चपिन्नताविम रतानमस्तुते॥ ३४॥
मचेस्तुकामविर्मर्यत्रुल्लमस्तुउत्तुवल्लीव॥
विभक्तमंतसुमस्त्रीतल्लतुअस्मिनदम्यतः॥ ३५॥
तमङ्गवांमधकुंस्तुत्यकामसजलिक भवतु मे॥
विमस महस्रतवमिदमितमिवस्तुयामने
ल्लासः॥ ३६॥ सुलिपुविमषण्डव गरसपठ
येस्रवेः स्फुटोदासः॥ नकमिह्नापिस्तुतेमिवस
जिविताग कल्पत्तंतोजः॥ ३७॥ जिलमतेपि

मर्यादे, इन्द्रशंकी [illegible] पतीनां जिः । माय

सुरश्रिये विश्वसारसृष्टिक्रियां तां [illegible] ॥ ४२ ॥

विश्वेन्दुधमनभ्यां दे [illegible] यान्त्रान्द्रुसरः

कला कलाय [illegible] र्यां [illegible] विश्वविमर्शपिड

वस्तुवउ ॥ ४३ ॥ क्षिप्रप्रीमत्स्यां पान्नरमधुं उद्भव

लस्यालुउ विस्मभमन ॥ [illegible] हृदि कलाक

लव उं लीढ मकलम ॥ ४४ ॥ क: मद्भव

विसर्गपउ खमा स्तुवउ [illegible] उमहेश ॥ [illegible]

शी: [illegible] के: स्फुर [illegible] मवमाम [illegible]

उ० ॥ मा [illegible] समस्कन्धे विकठ [illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

शतलक्षमष्टलेपुत्तं निर्यमि विचमान [illegible]

गंधवः॥ ३१॥ [illegible] ला [illegible] थं वि

मतिः [illegible] रः॥ तक्का [illegible] वेईयंद

मत्तां [illegible] यपद [illegible]॥ ३॥ तम्भायंभ वि

कल्कः [illegible] विष [illegible] ल [illegible] याम॥

शमि [illegible] विश्व [illegible] पांषे [illegible] मा [illegible]

देवी॥ ३॥ [illegible] वल [illegible] वि

[illegible] भाव [illegible] ॥ [illegible] वि [illegible]

गम्भवता [illegible] ल [illegible] ॥ ३७॥ [illegible]

[illegible] विजक [illegible] मत्त॥ [illegible]

श्री: ५ उद्घांठतः [illegible] मंयमि [illegible] ः॥ ४०॥

[illegible] मल [illegible] मिदम् [illegible] मेदः॥

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

विकल्प[illegible]ः [illegible] ॥ ११ ॥
[illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible]ः ॥ १२ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ १३ ॥ [illegible]
[illegible]ः ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ १४ ॥ [illegible]
[illegible]ः ॥ [illegible]
[illegible]ः ॥ १५ ॥ [illegible]
[illegible] ॥

शीः

उन्मत्तमत्तनिद्रः स्थिरः कृष्णतन्नस्वस्थितो
वति ॥ २० ॥ तत्त्वज्ञः प्रियतं भवत्यप्रियं
तत्र ज्ञेयः ॥ उन्मत्तमत्तशश्व अहं ज्ञात्वा
भवेत् ॥ २१ ॥ यस्मिन्नित्यं ह्यपिल्लमं विलो
कं नित्यमिसकुलमिन्द्रं ॥ मन्त्रार्थे ब्रह्मोस्य
सम्युक्तं तपःसंपन्नः ॥ २२ ॥ ज्ञानी
शिष्यं करुणापरं विकलाङ्गं ॥
धर्मं सकलं लक्ष्मीकं सैन्यं वदन्ति भवन्ति ॥ २३ ॥
येन लभ्यते महाभवपापं भेदित्वा भवेत्
ततः ॥ उपनिषत्किल तत्त्वार्थं सिकवद
त्यं स्मरति ॥ २४ ॥ तत्त्वमपि प्रत्यक्ष

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

क्षीणे समस्तं जगन्मये ॥ दृष्ट्वा भूति
भैरवं निष्कलं शुद्धं निर्मलं विश्वमाश्रितम् ॥
महाकालं प्रपद्येऽहं ॥ यस्येच्छा परिपूर्णं ज्ञान
रूपं कलितम् ॥ सर्वात्मना समाश्रित
ं यः स्थितो भवः ॥ ॥ परमात्मा समा
धि ॥ परमं स्वरूपं ज्ञानरूपं महत्तत्त्वं महदेश
ं ॥ देवी माया समेतः सृष्टिकारकं शिवं
तु ॥ ॥ ...
...मूर्तिः ॥ ...
...महापद्मः ॥ ॥
...
...
... ॥ ... ॥

ॐ नमः शिवाय ॥ नमस्तुभ्यमिदं नन्दू शिवं सर्ववि-
द्यंन्द्रे परे तु प तु दु र्दुर्कनस ॥ मदस्तु ढुकामी
समस्त शान्त विश्वकेनात्र तेन माकु दुनीतं सुरी
सुभग ॥ १ ॥ श्राप ऋं ठव कुव मा पुरा विठा
सु ठवडुं समस्ते भूतावे भूयाहु ॥ ठवे क्रिं तदे
पाश्च पादेय मठठवे क्रिं मदे यं विडि म यक्षु प उ
ठवतुं भू टीकतु मे पाउ द्वान्गी भूयान्वेठु कि
ञ्चि हन्तों रहुउ ॥ नित्य डुं विक्र स्तु क्रुं भूं
भि उगय धरय चगं भवे पच न्वठ पउग ॥ २ ॥
यथा स्तु क्रा हु विसे पाश्च मे धाठ वत्तीदू
क ऋ हव ढैव सदि ॥ उथा विज्ञ ठन्वा नि
पु ट्ठन्वाः समस्ता ठव कु मा पवा हुका
त्रि ॥ ३ ॥ यथा माय मदिः पवित्र सुरं
श्रीः समीमञ्जुनं व ड्रितु पं म्य मुत्र उ ॥ उथाम
७ क्षिनय ठ्ठु पाय उत्तुं सतु पक्षतु पंनि विद्रु
भिउय ॥ ४ ॥ यथा पद्म राग धवे कं सं

[illegible]
[illegible] ॥ ३० ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ ३१ ॥
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ ३२ ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

प्रतिष्ठातन्त्रविमर्शिन्यां प्रथमपटलविवृतौ द्वितीयमाह्निकम्॥
ॐ नमः शिवाय॥ शिवाय नन्दिकेश्वराय सर्वशास्त्रप्रदायि
ने॥ सर्वज्ञाय शिवाय शर्वाय पञ्चवक्त्राय नमः शिवम्॥ १॥
एतस्मिन् प्रथमपटले व्याख्याते। स्फुटः संस्कारमात्र ... शि
ष्य ... पवित्रकं यथोक्तं महाभिषेकादिकं स्फुटं पदानाम
र्थमात्रेण तुल्यं शिष्यके क्रियायां समुद्दिष्टम्, द्वितीयं
द्वितीये क्रियाविशेषे विवृतौ, तत्र प्रथमं ... विधेयं
काण्डत्रयात्मकमिति ज्ञेयं वस्तुतः, उपदिष्टमेव पूर्वम्
उक्तम्, उत्तरार्धमुक्तम्, तत्र श्लोकद्वयेन, एतत्सर्वं संवेद
नं प्रथमपटलस्य ... प्रकारेणोक्तं संस्कारत्रयं
पि, ततः श्लोकद्वयेन सूत्रार्थमात्रं संक्षेपेण प्रथमं प्रकाशितं,
तृतीयेन प्रथमश्लोकस्य मायानामपि शक्तिरूपत्वमुक्त
मिति॥ तत्र सूत्रे पि संस्कारे ... प्रथमं ... संस्कारः
तत्र श्लोके ... प्रथमं ... द्वितीये श्लोके ... मिति
तदाह, पूर्वस्मिन् प्रकृते॥ ॥ सर्वं किल सूत्रेषु
प्रकारेण संस्कृतः॥ एतमर्थं सर्वं ... कम्॥ ॥ प्रथमपटल ... स्यादेव ...
प्रति ष्ठा ११ मित सर्वमिति ... ॥ ...
... ... ॥ ...

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]

कार्यते, यतः तत्तत्स्वापन्नत्वे, स्वात्मन्येव समस्तं यत्तत्प्रकृत
रूपमिति, तत्स्वात्मनि स्थितं प्रकाशेन विकल्पितरूपं सत्
समस्तमिति, सिध्यति, ॥ ॥ नन्वेवं तदा स्तु वि
श्वस्वरूपं मत्स्वरूपः ॥ ज्ञानक्रियात्मकः स्वात्मस्वरूपं समस्त
भावं ॥ ॥ संवित्स्वरूपस्य तत्त्वान्तरं किंचिद्
पद्यते, मातृसंवित्तिरेव विश्वात्मा इति विज्ञातृ, ग्राहक
संग्राहकः । मद्रूपत्वेन ... तत्त्वतः
प्रकाशस्वभावत्वेन परत्वमिति ज्ञाते, गलितं ...
त्वः । प्रत्यक्प्रकाशस्वरूपं संविन्मात्रं तत्त्वलाभेन वि
पितृ... पातृत्वेन साक्षीकृतः । समस्तप्रकाशे यत्
... तत्र ... स्वरूपपरमित्युत्तरं ... वि
... इति ... प्रति
... कारणं, प्रभुः स्वरूपमपि समस्तमेव ... विमर्श
... विश्वात्मा प्रकाशस्वरूपं ... ॥ नन्वेवमतः
स्वरूपात् ... परमपि ... कारणं मात्रम्,
परिपूर्णः, किं ... स्वरूपे ... प्रमातृत्वेन ...
पतितम्, ... संवित्त्वं ...
... स्वरूपं ... नवं ...
मपि ... प्रति... यत् ...,
... ।
... ।

[illegible], तद्विषयविमर्शरहित[illegible]
[illegible]
[illegible] संविदः विश्वमय्या [illegible]
विश्वमयं प्रकाशते इति, एवं किञ्चिन्न [illegible]
[illegible]
[illegible] विकल्पित, संवित्ततः संवित्संवित्तु [illegible] ॥
संवेद्यं संवेद्यं तु [illegible], न विकल्पनं [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] विकल्प [illegible]
[illegible]
[illegible] विकल्पयति [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] विकल्प [illegible] प्रकाशमान [illegible]
[illegible]
[illegible] विश्व [illegible]
[illegible]
[illegible] किञ्चित् [illegible]
[illegible] इति ॥

प्रसङ्गविपर्ययः। नन्वेतल्लक्षणस्मृतिः यदुक्तं तत्त्वाभिमतप्रस्तुतेन
लक्षणेन सदसद्वस्तुः अभिमतेनैतद्विपर्ययः अस्मृतिः श्लोकाः
स्मृतिः ॥ तत्त्वरीमांसादाविनवद्यप्रकरिमास्थायां प्रकृ
तिल्लक्षणविभजितुं परमन्तव्यानुपपत्तिः तृतीयमाह्निकम् ॥
अथ नमः शिवाय ॥ पदार्थान्निरूपणीयान्तर्बुद्ध्या प्रकृत
म् ॥ इयत्तु स्मृतिसंज्ञा तु मतु दैव सुमः शिवाय ॥ ॥
लक्षणं प्रत्यक्षस्मृतिः तन्तयानुग्रहादिरूपिदनसमृति
ति। तावद्धेतुसम्भवं रूपेणाप्युपलक्षितम् ॥ तथा मानस्मृ
तेः स्मृतिरेवास्मि प्रसङ्गविपर्ययसमता नद्रूपाविवेशा ॥
सत्त्वम् ॥ किन्तु स्मृतिलक्षणमिति रूपभावात्तत्त्वम्, तत्र संस्कारमा
त्रतावदन्तर्भूतमपि स्मृतिरिन्द्रियजन्यम्, तथाकृतत्वस
रूपत्वतः तद्व्यावृत्तिवियिकरणमनुभवादित्यनुभवमयिं स्मृ
तित्वनिरूपणं यदि प्रमाणं तत्रोक्तं लक्षणं हानिश्चितत्वाः
प्रमातृरीतं श्लोकाद्युक्तम्, तल्लक्षणेन पदे स्मृतिरूपपत्ते
ति चित्तम्, द्वितीयेन स्मृतेः प्रमाणत्वविषयीकृतवर्ल
प्रकाशमानाममतत्वम्, तृतीयेन तत्त्वतद्विषयता
कीर्णपदत्वं त्वेषः स्मारणस्मृतेः स्मृतेः तत्त्वस्य विषयत
या स्मृतेः प्रकाशमानमिति निरूपितम्, पञ्चमेन यो लक्षणमस्य
प्र२ति तत्त्वं प्रमाणत्वेन विषयीकरणीति, तत्त्वतद्दृष्टिकल्प लक्षणप
२९० सिद्धिः प्रकृत्वासत्त्वमानमतत्त्वस्मृतेः प्रत्यक्षविषयीकरणम्
कालिकमित्यत्रानुवीतम्, सप्तमेन स्मृतिप्रसंगाह्निक
लक्षिप्रमाणत्वेनैकात्म्यमिदमिति: ॥ अष्टमेन स्मृतेः स्मृतेः

[illegible]

[illegible] ॥

[illegible]

केवलस्य स्वलक्षण[illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ ॥

नैवं स्वलक्षण[illegible]

[illegible] ॥ ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥

[illegible]

[illegible] ११ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] स्वलक्षण[illegible]

[illegible]

𑆠𑆱𑇀𑆩𑆳𑆠𑇀𑆱𑇀𑆦𑆶𑆫𑆴𑆠𑆂 𑆥𑆫𑆱𑇀𑆦𑆶𑆫𑆟𑆼 𑆱𑇀𑆦𑆶𑆫𑆠𑇀𑆠𑆳𑆪𑆳𑆁 𑆥𑇀𑆫𑆑𑆳𑆯𑆂 𑇆 𑆍𑆮𑆁 𑆲𑆴
𑆖 𑆥𑇀𑆫𑆑𑆳𑆯𑆱𑇀𑆮𑆫𑆷𑆥𑆁 𑆥𑆫𑆩𑆳𑆫𑇀𑆡𑆁 𑆱𑇀𑆮𑆳𑆨𑆳𑆮𑆴𑆑𑆁 𑆥𑇀𑆫𑆑𑆳𑆯𑆠𑆼 𑆅𑆠𑆴 𑇅 𑆠𑆠𑇀𑆥𑆫𑆁
𑆱𑇀𑆮𑆳𑆨𑆳𑆮𑆴𑆑𑆁 𑆮𑆴𑆩𑆸𑆯𑇀𑆪𑆩𑆳𑆤𑆩𑆴𑆠𑆴 𑇅 𑆠𑆠𑇀𑆫 𑆠𑆶 𑆥𑇀𑆫𑆑𑆳𑆯𑆼 𑆖 𑆮𑆴𑆩𑆫𑇀𑆯 𑆍𑆮 𑆥𑇀𑆫
𑆑𑆳𑆯𑆠𑆪𑆳 𑆥𑇀𑆫𑆑𑆳𑆯𑆠𑆼 𑇅 𑆥𑇀𑆫𑆩𑆳𑆠𑇀𑆫𑆷𑆥𑆠𑆪𑆳 𑆥𑇀𑆫𑆑𑆳𑆯𑆤𑆁 𑆤𑆴𑆘𑆱𑆩𑆪
𑆱𑆳 𑆱𑆁𑆱𑇀𑆑𑆳𑆫𑆫𑆷𑆥𑆠𑇀𑆮𑆳𑆢𑆱𑇀𑆩𑆴𑆠𑆳𑆪𑆳𑆁 𑆥𑇀𑆫𑆑𑆳𑆯𑆠𑆼𑆥𑆴 𑆱𑆁𑆮𑆼𑆢𑆤𑆩𑇀 𑇅
𑆠𑆠𑇀 𑆱𑇀𑆮𑆳𑆠𑆤𑇀𑆠𑇀𑆫𑇀𑆪𑆁 𑆮𑆴𑆩𑆫𑇀𑆯𑆫𑆷𑆥𑆩𑆶𑆑𑇀𑆠𑆩𑇀 𑇅 𑆱𑇀𑆮𑆮𑆴𑆩𑆫𑇀𑆯𑆼𑆤 𑆱𑇀𑆮𑆥𑆫𑆮𑆴𑆩𑆫𑇀𑆯𑆪𑆴
𑆠𑆵 𑇅 𑆥𑇀𑆫𑆩𑆳𑆠𑇀𑆫𑆸𑆥𑇀𑆫𑆑𑆳𑆯𑆱𑇀𑆪 𑆩𑆠 𑆍𑆮 𑆥𑇀𑆫𑆩𑆳𑆠𑆶𑆂 𑆱𑇀𑆮𑆥𑆫𑆱𑇀𑆮𑆫𑆷𑆥
𑆮𑆴𑆩𑆫𑇀𑆯𑆁 𑆥𑇀𑆫𑆠𑇀𑆪𑆨𑆴𑆘𑇀𑆚𑆳 𑆤𑆴𑆫𑆷𑆥𑆴𑆠𑆳 𑇅 𑆥𑇀𑆫𑆑𑆳𑆯𑆠𑆳 𑆮𑆫𑇀𑆠𑆶
𑆮𑆳𑆠𑇀𑆫𑆳𑆥𑆴 𑆥𑇀𑆫𑆑𑆸𑆠𑆁 𑆤𑆼𑆠𑇀𑆪𑆶𑆑𑇀𑆠𑆩𑇀 𑇅 𑆠 𑆥𑇀𑆫𑆳𑆥𑇀𑆠𑆳𑆪𑆳𑆩𑆮𑆱𑇀𑆡𑆳𑆪𑆳𑆠𑆴
𑆥𑆫𑆳𑆮𑆸𑆠𑇀𑆠𑆳𑆪𑆳𑆩𑆮𑆱𑇀𑆡𑆳𑆪𑆴𑆤𑆂 𑆥𑇀𑆫𑆑𑆳𑆯𑆂 𑇅 𑆤 𑆠𑆶 𑆢𑆩𑆱𑇀𑆡
𑆮𑆳𑆩𑆵𑆯𑇀𑆮𑆫𑆢𑆸𑆰𑇀𑆠𑆴 𑆢𑆵𑆥𑇀𑆠𑆮𑆱𑇀𑆡𑆳𑆮𑆴𑆩𑆶𑆢𑆳𑆁𑆯 𑆮𑆴𑆩𑆫𑇀𑆯𑆠𑆴 𑆫𑆤𑆳
𑆬𑆵𑆤𑆁 𑆱𑆫𑇀𑆮𑆼𑆑𑆳𑆤𑇀𑆠𑆫𑆮𑆱𑇀𑆡𑆶𑆠𑆴 𑇅 𑆪𑆠𑆶𑆑𑇀𑆠𑆩𑇀 𑇅 𑆪𑆱𑇀𑆩𑆳𑆢𑆤𑇀𑆠𑆫𑆮
𑆤𑆼𑆮𑆥𑇀𑆫𑆳𑆠𑆴 𑇅 𑆠𑆱𑇀𑆩𑆳𑆢𑆼𑆠𑆶𑆁 𑆮𑆴𑆖𑆴𑆤𑇀𑆠𑆑𑆳𑆬𑆳𑆤𑆳𑆁 𑆱𑆁𑆮𑆴𑆢𑆁 𑆮𑆢𑆴
𑆠𑆴 𑇆 𑇆 𑆪𑆢𑆶𑆑𑇀𑆠𑆁 𑆥𑇀𑆫𑆮𑆸𑆠𑇀𑆠𑆴𑆮𑆳𑆢𑆫𑆮𑆂 𑆱𑇀𑆮𑆠𑆳
𑆥𑇀𑆫𑆑𑆳𑆯𑆳𑆠𑇀𑆩𑆑𑆁 𑆠𑆶 𑆥𑆫𑆩𑆳𑆫𑇀𑆡𑆠𑆳𑆁 𑆩𑆳𑆲𑆶𑆫𑇀𑆢𑆼𑆮𑆢𑆁𑆠𑆪𑆳
𑆫𑆮𑆼𑆫𑇀𑆥𑆳𑆯𑆱𑆁𑆑𑆶𑆖𑆴𑆠𑆳 𑆠𑆢𑆁𑆯𑆼𑆮 𑆑𑆴𑆠𑆥𑇀𑆫𑆳𑆥𑇀𑆠𑆴 𑆤𑆴𑆮𑆴𑆯𑆠𑆶𑆠𑆳
𑆩𑆫𑆮𑆱𑇀𑆡𑆥𑆶𑆣𑆪𑆢𑆥𑆬𑆬𑆮𑆴𑆩𑆴𑆠𑆴 𑆠𑆢𑆫𑆩𑆠𑆼 𑆥𑆴 𑆑𑆴𑆁 𑆫𑆮𑆫
𑆢𑆴𑆪𑆼𑆠𑆠𑆴 𑆥𑆳𑆜𑆥𑇀𑆫𑆳𑆪𑆁 𑆥𑇀𑆫𑆠𑆴𑆥𑆢𑆴 𑆥𑆠𑆴 𑇆 𑇆 𑆄𑆢𑆼𑆠𑆪𑆶𑆑𑇀𑆠𑆶
𑆤𑆳𑆩𑆵𑆯𑆱𑆳𑆮𑆩𑆴𑆠𑆴 𑆥𑆴𑆟𑇀𑆣𑆠𑆶𑆂 𑇆 𑆠𑆶𑆬𑆳𑆑𑆫𑆬𑆱𑆑𑆳𑆯𑆳𑆩𑆪𑆳
𑆢𑆸𑆯𑇀𑆪𑆩𑆴𑆠𑆴 𑆱𑆶𑆠𑆂 𑇆 𑆤𑆴𑆑𑆳𑆯𑆠𑆮𑆢𑆫𑆤𑆱𑆁𑆮𑆢𑆤𑆁 𑇅 𑆱 𑆢𑆴𑆫𑇀𑆮

[illegible]

[illegible] आह्निकम् ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ [illegible]
[illegible] शक्तिपातप्रकाशकः ॥ [illegible]
[illegible]

[illegible]

देन प्रकाशमात्रं भवति ज्ञानसत्तिरित्युक्तं भवति ॥ ॥
प्रमाणेनापपन्नत्वेन सिद्धं तत्प्रमाणं न भवति ॥ ॥
प्रागिवार्थोऽप्रकाशः स्यात् प्रकाशात्मतया विना ॥ न
प्रकाशश्च भिन्नः स्यादात्मार्थस्य प्रकाशता ॥ यथैव नीला
दिस्वरूपं नीलादिस्वरूपत्वेनास्य प्रकाशमानता नचैव
पराक्रियते सर्वत्र नीलं प्रकाशात्मता । तद्विपर्यये
मवाप्नोति नीलमेव तत्स्वरूपतया बाह्येत । वस्तुत्वा
भावाद्येव, तन्नीलं परमार्थपरनिष्प्राणं प्रपन्नः ॥ भावाद्वि
नाननीलं, नानीलं प्रकाशात्मत्वेन विना भवत्यत्ना
यितात्, तथा प्रकाशमानतामेव नोपपत्तिः कस्मिन्
प्रति । स्वपितृस्वात्मैकेन, स्वात्मैकोपि कश्चन स्वादित
तुत्वात्ताः ॥ अथ त्रियापि कादिह नो तां
कामस्तु पर्यन्तं नीलत्वं विशिष्टत्वं, एतः प्रथमं
पिप्रत्यक्षः, प्रकाशतावा नप्रयत्नेवं दिशः ॥
मवधात्मशरीरविज्ञात इत्युक्तेपि ममात्व
मतः उत्प्रमातृलक्षणतया प्रकाशस्य प्रति
स्वरूपपादः प्रमात्रादितः नानी म त्रियादिमिय
[illegible] तत्पदप्रकाशप्रकाशनं भवत्नीलमपि तत्त्वस्य
[illegible] नमस्त्रिवीरप्रतिष्ठितः स्तः ॥ तत्र यदि प्रकाशस्य
[illegible]

[illegible]

स्थितेषु प्रकाशमानेष्वपि तेष्वनेकविषयान्तरेषु, प्रकाशमानत्वप्रका
शैक्येन प्रकाशस्वभावमिति कृत्वा ॥ यदि स्वभावभेद एव,
नीलानां प्रकाशस्वरूपत्वमेव भिन्नत्वं ॥ तदिदमाह नित्यस्य प्र
काशमात्रस्य पर्यवसानं नाम्नैव, तथाहि नीलस्य प्रकाशः
पीतस्य प्रकाशः इत्युचिते नीलांशः पीतांशः स्यात्, अतएवात्र
स्वस्वरूपेण स्वात्मनानुगताः पतुः॥ स्वविषयः, तदेव
विशेषतः, इदं प्रकाशनं नीलपीतयोः भेदरूपतः
यदेवं प्रकाशनं नीलं नीलरूपतयैव, तदेवं प्र
काशनं पीतः पीतरूपतया कथं सम्भवति, नीलत्वमपि
तः पीतत्वमपि तत्र न वाच्यम्, सकलमात्मनीकल्पितमि
त्युक्तं॥ तद्विहितं नीलपीतयोः भेदस्तु, भावविवि
वादः। स्वनीलाकारस्यैव तत्र निष्पत्तिर्विश्वरूपत्वम्
अस्य विशेषणं विभागमान्यस्य त्वात्म, स्वभावभेदः॥ तदिदं
मेदः॥ तथाकारेणैव तन्निर्वाणसिद्धयः
नैवं तत्र नीलादिरूपं सकलं प्रकृतमस्य इति कथं
भेदः। प्रकाशस्य स्वरूपभेदो न तु तथाभूतमनुत्तर
[illegible] स्वात्मनः स्वभावस्थितिरूपं अशेषाकारेणाविभाषमाणं प्र
[illegible] मनस्तत्त्वरूपस्यैव स्वात्मनि, स्वतन्त्रत्वात् किम
नेकविधरूपादिकं प्रकाशेनेति॥ आह। स्वप्र
काशस्य प्रसिद्धिरेव नैकात्मत्वं, स्वावभासिनीलादि

ति पीतं च किं [illegible] किं प्रकाशेत [illegible] स्वतश्चेत् [illegible]
[illegible] भावरूपम् [illegible]: प्रकाशस्यैव [illegible]
[illegible]: प्रकाशम् [illegible]: स्वप्रकाश [illegible] इति चेत् ॥
तन्न [illegible] प्रकाशस्य [illegible]: प्रकाशस्य [illegible]
[illegible] प्रकाशस्यैव [illegible]: सैव पर [illegible] विश्व
वपुः प्रकाशः सिद्धः ॥ ॥ [illegible] प्रकाशस्य
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] प्रकाशस्य [illegible]
[illegible] ॥ तत्प्रकाशस्य [illegible]
[illegible]
[illegible] नील [illegible]
[illegible] पीतं नील [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ।
[illegible] ॥ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]

येनास्य वेद्यस्य किं निरूक्तम् ॥ ॥ तदेवोपपाद
यति:, प्रकाशमानतैव रूपमस्य परमार्थः ॥ प्रकाशाति
रिक्तं यदि नीलमस्य रूपं, तर्हि तदप्रकाशरूपमिति न
प्रकाशेत, अथ तत्प्रकाशरूपमेवास्य रूपं पीतप्रका
शः कथं स्यात्, अथापि च भिन्नं नीलपीतादि प्रकाश
रूपमेव तस्य रूपं, नीलादिनामस्य भेदिनी प्रकाशः
स्यापि पाक्षिकत्वे स्यात्, तथा च प्रकाशः प्रकाशत्व, स्व
भावतमपि नत्र परात्मनोर्भेदिनि वेद्य स्वप्रकाश
वेद्यकल्पितो नानात्वं कल्पितत्वात् नामवेद,
रविभिन्नानामात्मतः कारणं तद्विपर्यये पपत्,
दृष्टान्तोऽनेकांतेऽप्येतत्प्रमाणान्तरात्, तस्मात्स्म
ति च नीलपीतादिरूपस्य कथञ्चित् : स्वतन्त्रप्र
काशस्य अनुदर्शकः सत्यादर्शि विज्ञानगतप्रतिवि
म्बादि सत्पटल समयाद्यक भोक्तृ स्वभावा
लोकपरामर्शं स्वयमेव तत्स्वरूप स्वतन्त्रतार्थं
न रूपं प्रतिसमवमाप्य ... ।
सम्भावयते, वाक्यतयाह, तन्त्रान्तरं सम्भाव्य
मानमपि तु विमृश्य परमार्थं भावत्वेति । तथा
हि । विज्ञानवादिनामपि दृश्यते किन्तु विषयस्य प्रव
र्तनं चोत्तरार्धेन प्रकृतं । प्रतिपादकस्मं स्व

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] [illegible]
[illegible] [illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] [illegible]
[illegible] [illegible]
[illegible]

नचैवम् उभयथापि सम्बन्धाभावप्रसक्तिरिति। उक्तं किम
न्तःप्रतिविम्बितप्रमेयनिश्चयेन स्वप्रति वि
म्बितानामवैचित्र्यं विज्ञानस्य ... इति चेत् तत्राह त
त्त्वतस्तं दूरं कल्पयाम। किं वा यनिश्चयेन अवि
च्छिन्नमेव देश कालवच्छिन्नत्वं याम। तन्निष्ठं सम्बन्धि
तेऽपि अस्मन्॥ नान्यथा प्रमाणमधीनाधिग्रह इति
ता च पाकत्वमाह॥ स्वप्रमाणमनाधिगतं प्रत्येवैवमि
ति याम। श्रुतावेव श्रीपदं नाना प्रमाणत्वमुच्यते॥
श्रुताम: प्रमाणानामन्नामामी कृतं चेत्॥ स्वयं
व तेनास्मिन्निति नाप्रमाणत:॥ न केवलमन
वस्थित्या निश्चितं विद्यते: प्रत्येकं ... नाम
त, उपपद्यते प्रत्यक्षं, यथा लोके दृष्टिः तत्रा
प्रकाशसंविदन्तर्रूपं, नान्यत् किञ्चित् इति: यथ
देवमानेन पितृ स्वतन्त्रमिति पितृपिस्वत:
तत्र मानमनेन, प्रवर्तितत्वमुद्दिष्टं। प्रवर्तमपि
प्रतीतिमिति मानसप्रा। निर्णीतं नश्चेत्। तत्र मानं वि
कल्प: सम्बन्धायं विकल्पे, वक्तव्यप्रत्यक्षप्रसिद्धम
तेन यद् लक्षणान्तरं प्रत्यक्षमन्तरेणोक्तं, तत्र मान
५२५ मन्त्रमितिरूपाणि विकल्पान्तराणि वक्तव्यानि तत्
०३२ त, नचैवं प्रत्यक्षमनुनिश्चयमानमविकल्पं॥
स्वमाहात्म्यं किं वक्ष्यामि। यथाविकल्पमा

[illegible]

द्वितीयवर्णादारभ्य [illegible] नमः ॥ [illegible]
नापि ॥ [illegible] विकल्पः [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] विकल्प [illegible] ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible] ... [illegible] विकल्पः [illegible]
विकल्प [illegible]
[illegible] ॥ ॥ [illegible]
प्रकाश [illegible] ॥ ॥ [illegible]
[illegible] प्रकाश [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] प्रकाशः [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥
[illegible] [illegible]
[illegible] [illegible]
[illegible] ॥

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] [illegible]
[illegible] [illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

यादि तु सर्वं सर्वत्रेति, तत्तोऽप्याः प्रवृत्ति, प्रत्युक्तिविनं तत्र
लं प्रवृत्तीति, यदि भावयति तद्वदाकृष्य सज्ञायमेव
[illegible] पति [illegible] यदि तु तीति भावयतीति नयतीति मि
ति, [illegible] विकल्पत्वा
पारः, [illegible] तस्य तत्र एवं।
तथापि [illegible] विषयत्वेनेति [illegible]
[illegible] भावः। [illegible]
[illegible] तु तत्र वति। [illegible]
[illegible] ति, त [illegible] पमयमेवेति, य [illegible] विषय [illegible]
[illegible] पि [illegible] ति, तथा [illegible]
पा [illegible] विषयः। तथापि [illegible] मवठासि
[illegible] ति, [illegible] विषय [illegible] पि [illegible] ठिला
पमय [illegible] तः, [illegible] मज्ञ
म यीत [illegible] विकल्प [illegible] प्रमा [illegible] मा [illegible]
[illegible] पक्ष [illegible] : [illegible] विष
[illegible] विकल्प, [illegible] किम [illegible]
[illegible] तः
परामर्शः। [illegible]
[illegible] ति, [illegible] यत [illegible] ति, तथा [illegible]
प्रवृत्ति [illegible] तः। [illegible] परामर्श [illegible]
[illegible] ति विश [illegible]
[illegible] ति, [illegible] मयी [illegible] ति, [illegible] तः तु

[illegible]

[illegible]

रूपम् । तदेवं ह्यमिदं न मा स्फुटं तत्त्वं परस्य विश्वस्याव
स्थितं । परस्येव तत्तत्समख्यातानां परावस्थेति विमर्शयतु प
तु ॥ अथ अवपरित्यक्तात्मतत्त्वेन कल्पाद्विश्वदर्शि
तिमर्शनम् । तस्मात्तत्त्वं ह्याह अपि विकल्पात्मकं तु,
प्रत्यक्षलिङ्गतदनुभूयमानरूपतयैतद्, तत्र अनिन्द्रियेण, एवम
देवं विकल्पः । तद्दमित्युक्तिविमर्शः । न विकल्पं
तद्विकल्पतया भेदाकारता । मायेऽपि प्रमातृतयाख्या
पारतन्त्र्यः । एकपृथग्भावमात्रत्वे तत्र पृथक्तया यमिति
अवभासः सत्ते कथं समस्तं तं ज्ञानमात्रं ॥ ॥
नत्वेवमभेदमित्युपि पृथग्भावमेवं दं रूपतया परदेः पृथ
गेतिः पदनीयता पदं विकल्परूपताकथंचन ज्ञः इ
ज्ञातव्येनाद ॥ ॥ इत्युक्तं मायया दिव्याविवतना
वतारितः ॥ इदं एव तत्त्वं खप्राकल्पितैतं ठगीवता ॥
प्रमातृत्वेनादमिति विमर्शेन अपदत्वं विकल्पत
वमपरप्रतियोगितानामत्वः ॥ ॥ अदमित्युवमर्श
स्तुत्ता शुद्धमायीयः । तत्र शुद्धः संवित्सत्त्व वि
श्वाठितं । विश्वस्थायाश्रितस्वस्थानं इति अस्तु
देहरूपमशीरिति तत्र शुद्धं पृथग्भावमनपेक्षयैवा
नकल्पितत्वादितत्र । सम्भवति । अपरस्मापि पृथक्कप
मात्रत्वात्प्रत्ययेषु प्राप्तं हेतु । तदुपदात्व
कथंतत्र विकल्परूपता । अशुद्धे तु देहरूपमशीराहस्व तु

[illegible]

[illegible]

[illegible]

कथमहमहमिति केचिद्, संस्कारः प्रातु नाशनवतत
तामसमात्र पूर्वविकल्पस्मृतिवशादिति यावत्, पूर्वं च लाभ
लवमात्रमहमिति:। स्वपिण्डस्याप्यनित्यत्वप्रसङ्गात्, प्रवृत्ते
चैतन्ययोगात्, स्वयमपि विकल्प एव, स्मरणात्तु य
इति चेत् अनुभवोऽपि विकल्पत्वम्, सत्यम्, किन्तु
स्वं स्वं अन्तरङ्गमिथ्याविकल्पनविभूतिरमितृतिवश
स्थितः, इति संपरिमर्शपरिमीलनप्रथमकल्पक
पायत्वम् अन्तर्मुखः॥ १ ॥ नन्वहमिति
प्रत्यवमर्शात्मकत्वात्, येन प्रमातुः प्रकाशस्य प्रमेयं
न भाति, तत्कथम्: अत्र प्रत्यवमर्शं विना अपि न प्र
मातुः प्रकाशं किञ्चिन्नवभासनादिपि विमृष्टं प्रकाश
मात्रेव, विमृष्टप्रकाश इति निरूपयन्तु यन्न मध्य
स्थूलादिसङ्कल्पविकल्पादिपिण्डत्वं उक्तं भवतीति दर्शयति॥
॥ तदेवं तवदर्शनपिण्डत्वेऽपि दर्शनादिमात्रविमर्शः, तत्र
मेवात्र सत्यमिन्द्रियाणामपि दृष्टिः॥ ॥ यदुक्तं
दर्शितं देहवस्तु विज्ञानादि, तदेवमुपपद्यते, कथं यदिदं च
रूपमात्यादिदर्शनादिमपि प्रत्यक्षं प्रकाशपरमा
त्मलक्षणस्य चैत्यस्य विमृष्टदर्शनादिपरा
रूपत्वं पञ्चदशयन्त्रं विमृष्टं भवति मदमिति चैतन्य
मन्त्रापि निरूपणादिदिनमिति भासयति॥ तत्त
दुपपद्यते। स्वरूपानुभवमात्रात्। दृष्टान्तं॥

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] [illegible]
[illegible] [illegible]
[illegible]

तथाप्यवेदनः स्वतन्त्रं देशाद्यनवच्छिन्नं तत्प्रकाशनमावि
ले यदुक्तं, इतियभाषि:॥ तस्य देशात्मस्वदेशात   सर्वत्रम्‌देशा
त्मदेशात्‌ इतियभाषि: सत्ता विरत स्वरूपं तं कल्पप्रवमानीयत,
मासचभिन्नं विनाशीति सत्ता विरत स्फुरत्तं कल्पप्रवमानीयत,
तत्रियस्यात्तत्त्वपकल्पितविकल्पत्रियालनित्ये वस्तु स्वकदा
तत्त्रियस्वात्तत्त्व समस्त्रिरूप इति: केवलं विषयोल्लासवेलायां
वस्तुपलब्ध स्वभावतासस्वमति:, सम्यक्‌सियोगपरूपनिर्विविक्त
ते: स्वभावतासस्वमति:, पदार्थानां वस्तु भासमानवस्तु स्वरूपदेसकालासे
स्वरूप:। ए: पदार्थानां वस्तु भासमानवस्तु स्वरूपदेसकालासे
स्वरूपकल्पित: स्वमदेसकालपरिपाटीत न्तु धिया प्रतिविम्ब
कल्प, तयातप्रदुरा याप्रतिभातत्त्वा, केवलं विज्ञसंवेद्यतया निवा
लक्षतिरमचक्ष्ष्वप्रकाशस्वरूपः परमात्मस्वात्तत्रेपवत्रप्रका
समातुपरमात्मतयाठनानावाद स्वमा सेव, मदशः स्व
विवृमोवस्तुपि विमृश्य नस्वस्वालत: स्वतःपतस्य यस्मान्नित्यसं
विदधुदवस्तुपंयस्मित, स्वतस्रववदिसंप्रकाशात्मकवि
तस्य तावस्य प्रमातृत्वसायतु: प्रतिष्ठा समिनसिद्धमि
नवकल्पि विकल्पमयि विमर्शात्मा प्रमाससमदः तस्मं यत्प
विग्रोलव विभ्रमात्मकप्रकाशस्वतत्त्व प्रल: स्फुरदप्र
नमस्यमयः, प्रमात्तामठएत। स्वतस्त्वं विदित्वा, प्रकाश:
स्वरूपं प्रकटत्तु विकल्प: श्रीदत्तप्रवस्तुप: स्पन्दमिति॥

श्रुतौ तु नोपपद्यते. ततश्च स्वाभाविक्या यथा [illegible] प्रमाणसिद्धिः
प्रत्यक्षादेः [illegible] [illegible]
षः॥ ॥ [illegible]

[illegible]

प्रमातरि ॥ ॥ तदस्य भिन्नं ख्यापनं संविदन्तरा-
मितं प्रमाणत्वं वृत्तं, तद्विशिष्टं जातिप्रायत्वं तद्विशि-
ष्टजातीयकः । सामान्यविशेषः । तदस्य भिन्नं तु पञ्च-
लक्षणा प्रमाणत्ववचनं, तदेव युक्तं, यदेतत्तत्त्व-
संवेदनाभिन्नं प्रमाणत्ववचनम्, नान्यत्परं, यद्यप्य-
त्रान्यमेव, वस्तुतत्त्वान्यमिति, तत्त्वतः सद्-
भेदाद्यवस्थावस्थानमिति । प्रमि तु भेदस्य लक्षण-
प्रमाणत्व संवेदनमेव स्यात् तत्त्वस्य प्रमाणत्वमुक्तं
...प्रमाणत्वमेवं सिद्धमिति तन्न युक्तम् ॥
तत्र किं प्रमातृत्वं भवति ॥ स्वतः प्रमाणत्व यथोक्त-
स्य सिद्धं तत्त्वोपपादनं यदि स्वतःप्रमाणत्वमेव तत्त्वस्य-
संवेदनं भवति ॥ ॥ एवं सत्त्वस्य लक्षणासिद्धं
तत्त्वाय [illegible] त्वा ॥ नतु पञ्चत्व
यत्र प्रमाणत्वे यथोक्तः ॥ ॥ यदि प्रमाण-
त्वतः स्वपरेण तत्त्वं सिद्धमुक्तं, तदन्यत्वेनापि
सिद्धं तत्त्वनानावेदवत्त्वलक्षण सिद्धं ॥
कथं सिद्धं स्वलक्षणं तदन्यत्व यदि भवति ॥
तत्स्वरूपं तल्लक्षणं, यद्वा स्ववदनः सिद्धम् ॥
यत्र स्वरूपं तद्विषयं, तल्लक्षणं प्रमाणं ॥

प्रमातृवित् ॥ ॥ उदयस्थितिलयानां ध्यानानां सर्वविदन्तानां ज्ञा-
तृत्वं प्रमातृत्वं वक्तुं, उदयस्थितिलयोपायत्, उदयस्थि-
तमतुरीयकः स्वात्मस्थितः ॥ उदयस्थितिलयैस्तु उपचार
[illegible] प्रमातृत्वेन, [illegible], यदि [illegible]
सर्वमनाज्ञत्वं प्रमातृत्वमनम्, [illegible], यस्य
[illegible] एव, [illegible] इति, [illegible]
एव हि [illegible] इति, प्रमि [illegible]
प्रमातृसंवेदनमेव [illegible]
[illegible] एवं सिद्धमिति [illegible] ॥
ततः किं प्रमातृत्वं भवति ॥ [illegible]
[illegible] सिद्धं [illegible] एव [illegible]
[illegible] भवति ॥ ॥ एवं [illegible] सिद्धं
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ॥ [illegible]
[illegible] उदय [illegible]
[illegible] ॥
[illegible] उदय [illegible] भवति ॥
[illegible] सिद्धति ॥
[illegible]

तस्य नाशि, पिशाचादिः श्वभ्रवलाकुष्टकामस्यादिः
तन्मादकेसुरा दिशामशीमाकलुष्ट तत्केन्दुनमंमति
दे वस्तुतः प्रतिपत्तु ना वेनानिक्षयातु, तस्यापितादन्तेनात
वेत्रवदादः। कुतलेनपिशाचनस्य, ंति, यत्रतुविमर्षं
ष्टेत्रमस्तस्वपयोगि, तत्रतुतिवेके ऽनाववेवदतटनेष
तुपाय:। कुत उतिचादतिप्रमन्दुदितिकमः। तमव
दनयति, ॥ ॥ विवितुं कुतलंमस्वनावानां
श्वानिविक्षिते॥ तकेवं ९ तुतन्दुनंतिनस्यानावमा०
नम ॥ ॥ विनुमान पिपाठे कुतलंमतुनमव, नदि
नवामिशीनवति, तस्यतदपिस्वकुकुतलन्दुनम श्रीति॥
सतुपिपाठेकषामनवकुतिवकेन नतुवन्दियति, सुर
कुतलेपाठेनाश्रीति, तन्दुनमिति विवितु कुतलनागन्दुनं,
९ क्षितिकसंगिदवदसायांपा९म जिणवकुपायां
त्रिनस्यपा९नावंमा०यति, नतुमवदति, कनपक
नान्त वेत् नतेनातु कुतलपिसविना श्रीतुपिस्य
दिकुप तितंमतुनमे, नतेवंतुतोकानावनिक्षुटवद
वलेक, तावदविशितः कस्यांकिदवदसा
यांतुश्रुतप्रकांदनयति, कितुलेक०यतुस्य
प्रटवि मं जेविक्षुदिकेश्रुदः। ततासितुमा०यतुस्य श्वन्दुनम
९ प। पा९दूतामा, उदनवनकातुस्यानाव ंतिटवदत
टः। उतुयंतेवदपविशेलुः। प्रातीतिकः पतुः॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

येषां संसारसमुत्तारणदायकत्वात् सैव प्र माहात्म्यप्राप्ति-
का शिवत्वसिद्धिः । यदुक्तं सर्वज्ञत्वं भावयन्नेवेति ॥ स्वप्रति-
ष्ठत्वप्रमातृतां संप्राप्तस्य [illegible] स्वरूपं समानवत्त्वम्
इति शिवम् ॥ ॥ इति श्रीमत्पादादिनवपुरवि-
रचितायां श्रीमहेश्वरप्रतिष्ठायां [illegible]
शिवत्वप्राप्तिसम्पूर्णमाहात्म्यम् ॥ ॥ स्वसंवेदनसं-
सिद्धत्वदायकमनयः ॥ नित्यं महेश्वरः सिद्धिदातेति
मः शिवम् ॥ ॥ नवं तत्त्वज्ञानपदनिष्ठा तत्,
तत्र सकलमात्मीयं विना तत्त्वदर्शनेन यत् इति निष्पत्तिम् ॥
[illegible]
५१ ...

यदनुसामर्शं वागिन्द्रियप्रवृत्तौ तेनाभासेन घटं पश्यामीत्येवंरू-
पं, तत्रोपरक्तः तत्राभिलापः निश्चयात्मा भवति, यत्र स्मृत्यो-
त्प्रेक्षादयः, शब्दविषयानुकम्पस्य प्रमातृविषयः, प्रमेये त्वेव-
म्, स्मृत्यादयः, तत्र तेषाम्, स्वप्रकाशतादि एतत्तु
स्य वागिन्द्रियप्रवृत्तौ तल्लक्षणं भासेतामात्रं नैवास्ति, किंचित्तस्य
मीतत्सन्तुमसन्धि तस्य तत्कालिकत्वात् अस्ति, स्वपितृ प्रत्युत
मेव वागिन्द्रियप्रवृत्तौ तेषां संवित्तौ, तस्मात् सर्वत्र निश्चयात्मकः सवि-
पि विकल्पः स्मृत्या स्वरूपविमर्शस्येति, सन्धानात्मकत्वात्,
तदि विकल्पनाविरहस्य नामिनिवाप्तविश्व निश्चयाप्तवत्, वत्
मात्र निश्चयात्मकत्व विमर्शात्मत्वं भवति, नीलमिदं पश्या-
मि सङ्कल्पायां प्रवृत्तौ स्मरामि केवलमित्यस्मीत्यमाधीनीलाभा-
सेसा स्वरूपतत्र नाधिक एवं पश्यामीत्यपि यः पीतादिषु, तप्र
त्यासाभासः स्मृतौ स्वत तौ यदनुभवतामं विगतं, वि-
कल्पेन, तस्य स्मृत्यास्मृत्यादि उत्प्रेक्षादयः, नीलमिदंना
मनु वृत्ते तन्मात्राभासामात्र प्रवक्तुमेव पश्यामीत्याभासह-
सिन्धुयां स्मृत्यात्प्रवदाय, एवं तत्कालिकत्व प्रवदायवैचित्र्ये
पपत्तिः परमस्वरस्वरूपं तत्त्वे ध्वनयन्ना भानां तत्त्व शुद्धि
वस्तुनः नकेनचिन्निश्चयमित्यलमिति॥ ॥ नन्वतत्त्रीलादिषु पप-
श्यां यत्र वागिन्द्रियस्यापतिस्थि, आपादितत्त्वदनावाक्यव
निश्चयमितासन्धानं॥ ॥ आपादितेष्वभासमानदितत्त्व-
५२ठि पिण्डवस्तुषु॥ स्वरूपसंग्रहसङ्क्षेपवत्तीतत्वात्तथाप्रतिः॥
९ ५२ नासंभिन्नासु मात्र तद्विकल्पनस्वापादिके॥ तथा
९

[illegible]

श्रीगुरवे शिवाय नमः

[illegible]

लोकिस्ताः क्रियायाः कालसङ्गतिः॥ प्रत्येकतु साधारणः प्रति
स्ता स्फुटं प्रति॥ ॥ तत्रोपरूपस्थितपतिदत्तमिति, यत्र प्रत्येक
क्ष्णोपरूपसमवेतः, तत्र यथा तस्य क्रिया कालस्ताभिः
तेषां सामान्यमात्रं प्रत्यक्षेणैव ताति, यस्तु भट्टैस्तथाकृत प्रत्यक्षपरि
का स्फुटमानं रूपं तदस्मदादिकार्यस्य अभिव्यक्तिः क्रियादस्तु गत्वा प्राप्ति
रूपमिति स्फुटरूपा निरूपणीया, ताभ्यः केवलं प्रत्यक्षपरीक्षितस्य भर
मीयत्वात्, लोकिस्ताः क्रियायाः सदृशं कालसम्बन्धसत्त्वम
विशिष्टन प्रतिमेन भासमानरूपत्व पारम्पर्यात्स्फुटविशेषाभावात्
तपपत्तेः, यत्तु पूर्वं स्फुरत्क्रियाभ्यस्तत्तत्क्रियासत्तायाः
सैव कालेन सह, तस्याः स्फुरन्मनुभवपीतिमनुभवनापिता
त्, यथापूर्वं स्फुरन्मनुभवस्य स्वभावम्, तथा स्यापि, तत्र दि
दत्तस्य सह मत्वेऽपि तत्ताम्यापि क्रियात्मकाभ्यानिति॥ ७ ॥
नरकालविशेषणभावरूपा स्फुटत्वे स्वभावरूपेण वस्थिता ति,
तत्केवलं कालेनाभ्यस्ता सत्ता ८॥ ॥ कालस्य प्रत्यादि
मत्त्वस्य तद्रूपतादि लक्षणा सीति प्रतिभाषत्वलब्धः स्वभाव
सतत्त्वः॥ ॥ येऽत्र यत्तु याप परिनिश्चितो सुतरां भासितु
सुरूपा, स्वरूप प्रत्यक्षाणां सदकारमल्लिकात्मकानां
स्फुटि सीति प्रत्यक्षः परस्तु तमन्दविलासास्पदं स्वरूपकालः स्वत्,
२ ७ परिनिश्चितं न भवपं नान्तिते यत्तु याप परिनिश्चीयते, परि
वर्तके स्विव कतकाम्, भावकम प्रत्यक्षाणां स्वभावविशेषः॥

लक्ष्यमाणप्रत्यक्षैव क्रियानुपपत्तिमाह । किन्त्वेकस्यैव क्रिया
सत्त्वेऽप्युपपत्तिमत्त्वमिति शिवम् ॥ ८ ॥ श्लोकाः ॥ ७२ ॥
इति श्रीमन्महामाहेश्वराचार्यवर्याभिनवगुप्तविरचितायामीश्वरप्रत्यभिज्ञा
सूत्रविमर्शिन्यां क्रियाधिकारे क्रियाशक्तिनिरूपणं प्रथम
माह्निकम् ॥ ॥ विविधमविकल्पं सम्बन्धं वेद्यमापाद
यन् ॥ ... शिवम् ॥ ॥
यस्तु सम्प्रतिपत्तव्यस्तु तत्तथैव तु निरूप्यमस्ति तिष्ठति । तस्य
... क्रियानुपपत्तिमानक्रियासामान्यादिपदार्था
... निश्चयादयः तु क्रियासम्बन्धसम्बन्धा
दि । तेन ... कालक्रमपूर्वकेनापि कं प्रसूयते ।
तत्र प्रथमं क्रमेण ... कालेन ... क्रियादेर्वा
... सम्बन्धानुपपन्नमात्रमप्येवं
समस्तीयं प्रवृत्तिर्भवति । द्वितीयेनोपपत्तिरुच्यते ॥
तृतीयेन निर्विकल्पकसंवेदनसंवेदनेऽपि विकल्पः कल्प
... सम्बन्धोपपन्न इत्युक्तम् । ... मात्मक
नेकस्वरूपतायाविषयविभागः ... । ...
... क्रियाकारकभावा
... स्वरूपमुक्तम् । ... क्रियापदार्थोऽस्ति ... ॥
... निर्विकल्पसंवेदनसमनन्तरोपपत्तिः ...
... निर्विकल्पं ...
... स्वरूपमात्रं ...

[illegible]

[illegible]

ईदृशं [illegible] ॥ ३ ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible]
पंच [illegible] अध्यादि [illegible] विकल्प [illegible] स्यक:
परामृश्यते, [illegible]
विकल्पक [illegible] विषय [illegible]
[illegible] विकल्पेनापि [illegible]
[illegible] विकल्प [illegible] पंचसु [illegible]
[illegible] ॐ [illegible] ॥ ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible] विकल्पना: ॥ ॥ ५८ ॥ [illegible]
[illegible] विकल्प: स्वसंवेदन [illegible]
[illegible] निर्लिप्त [illegible]
[illegible] सिद्धा [illegible]
[illegible]
[illegible] निर्विकल्प
[illegible] सविकल्पक [illegible]
[illegible]
विकल्पक [illegible]
[illegible] विकल्प [illegible]

[illegible]

द्विसामान्यसम्बन्धक्रियाकृत्यादिकादिपदार्थस्वरूपाभावतः स्व
रूपासिद्धेः, मानसविकल्पे शब्दार्थाकारकल्पनाः सामान्य
स्य तत्त्वं तथा, एवं सम्बन्धोऽपि विकल्पवृत्तिः सम्बन्धमात्रं ॥
तथाहि संबन्ध इति संबन्धं सम्बन्धस्य वस्तुप्रकारस्य सिद्धिर्विकल्पादिव
स्तुतः ॥ ३ ॥ तत्सामान्यं संविदवस्थानरूपमिदं क्रियासम
वायाद्यं सर्वविस्तरः, तथापि समवायस्य सम्बन्धत्वात् तथा
हि सामान्यं यदेकं तादात्म्यं सामान्यम्, [illegible]
मात्रिया, अवयवानां यदेकं [illegible] सन्तः सोऽवयवी ॥
समवायित्वं यस्मिन् तत्सामान्यं [illegible]
सामान्यं क्रिया, [illegible] भवति ॥
वर्तमानादिकालः यावद्रूपा उपाधिक[illegible]
[illegible], तथापि सर्वं सम्बन्धरूपं भवति, कारकाणामपि सम्बन्ध
रूपत्वात्, केवलं [illegible]
त, यथा सामान्यादीनां [illegible] पदार्थत्वमादि
[illegible] सामान्यादिविषयः, [illegible]
[illegible], अत एव विधिप्रतिषेधादिप्रमाणपरि
[illegible]
[illegible]
प्रकृति [illegible] [illegible] समवाय [illegible]
[illegible], समवायस्य सम्बन्ध [illegible]
[illegible] समवायात् [illegible] सम्बन्ध [illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

ण्यीति ॥ ५ ॥ क्रियाविशेषणविषयत्वात्कारकाणां समव
यः ॥ स्वरूपविशेषणात्क्रियालक्षणादिनादिषी ॥ ॥
कारकाणां कृत्तादिसम्बन्धकारणां दृष्टानां यदिष्टं समवाय
इष्टेति, यथा मातृभेदमातॄणां मिथःश्रुतु जीवप्रमातृकृत्रि
याविशेषणतामेकैक विमिश्रकः। नदिप्रमापतामत्रमत्र
वर्तनं विदायवस्तुनः सान्नाम्नत्वयते संवेद्यते, अनष्टत
वस्तुपदा निमित्तत्वात्तु विषयत्वः ॥ कारककस्तुरीणामपियः
श्रुत्यैः सम्बन्धः सपिक्रियापतामत्र निमित्तकः। दृष्टा
नां सम्बन्धिनां नतु यथा साकं सान्ना स्वत्र डतीयं क्रिये
वतनवती स्ताववृत्तिक्षिप्तं सम्बन्धं साविज्ञापयति, अस्मा
दं प्रवृत्तं परं ज्ञात्वा तत्त्वं वदितितत्ता पराक्षुश्च सायित्त्वस्व
ये वस्तुतत्त्वं प्रवर्त्तं तं नवमत्र मत्र मतन विशात्त्वं स्यत्सुपमा
श्रुत्वा, उक्तिनामीश्रुते, अत्रदितु ये स्यात्स्वरूपत्व विशे
षपतामत्रान्नत्व तु सूत्रतु पातौ पश्वादि विम्रय: ॥
संयोगसंयुक्त संयोगात्ततादि परिशेषस्व पयेनी ॥
कालपतामत्रेषु प्रवृपादित्तु पत्तु लक्ष्मेषु त्वतादि
विमत्र क्षित्वादि प्रादितु पत्तु स्य प्र तु उपलक्षपादिनोऽद
तु सम्भावित्व श्रुत्वे श्रुतु प्रवृत्तिर्य संवेद्य
स्य त्रिउ नादितादि क्रियातु स्वतल विशेषणादि
नः पतामत्र स्वपश्यतु, लवं सद्रूपतिसान्नं प्रवृत्त
संयोगविशापवृत्तउपस्वत्वतु ५ उवक्ता, सवधायं

[illegible]

[illegible]

केवलस्य तु, सर्वेषमत्र: प्रमाणतत्त्वप्रमेयादिप्रवि-
भागस्य तु प्रकाशितत्वेपि प्रमातरि, उक्तं च तत्र प्रमेयता-
या नात्रापि प्रमाणव्यापारसम्भवः, केवलं तु वेदकभा-
व इति स्थितं प्रमाणमसत्त्वमिदं तु यत्प्रमाणरूपतायामुदितः
येनैव त्रिया सम्भवाद्विकल्प्येतरभागस्य भाव इति
देवविल्लीत्वं प्रमाणतत्त्वस्वरूपं भवति इति मनुं य
वदति ॥ ॥ इदमेतानुमितेर्वस्तुस्वरूपमुपवर्णयति,
वस्तु प्रमाणं तत्त्वमपि स्वात्मनैव विमृश्यः ॥ एतदेव
भावि समस्तात्स्वार्थस्य कालात्मनि ॥ सकारणस्य वि-
षय इति च स्तुतं च प्रथितम् ॥ ॥ यस्तु वस्तात्मना
वस्तु नीलस्वरूपादिकं प्रवर्तयति, नियतं प्रकाशमात्रा-
नं नातिवर्तते, इदमिति स्वरूपमन्यत्र निर्मितमविम-
र्शात्तु निर्णयात्सम्भवान्नतु यन्नेतत्प्रकाशप्रमा-
णमिति स्थितम्, तत्र विकल्पेन विना तु सिद्ध वस्तु-
नः स्वरूपं स्वात्मवशेनैव नतावद्भुवतिष्ठते, नन्वत्र
सम्भीलं प्रकाशस्तत्संभवति, सत्तानुगमसत्तायाः
तस्मात्तत्त्वेन स्ववति ष्ठते, अतएव विमलात्मप्रतिस्यन्-
दनात्मस्वरूपम्, तस्मात्तद्धि मानं विनाश्या ॥

[illegible] [illegible]
[illegible] रूपः स्फुटः। तदुक्तं स्थितिर्विषय [illegible], स्थि
तेः [illegible] [illegible]
[illegible], [illegible] भाया प्रमाणत्व [illegible]
[illegible]
[illegible], [illegible]
[illegible], [illegible]
[illegible] प्रमाणम्, यतः प्रमाण [illegible], [illegible] प्रमाण्य [illegible]
सिद्धम्॥ ॥ नन्वेवं [illegible]
[illegible] प्रमाद॥ [illegible]
[illegible], [illegible]
[illegible] विषय [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible], [illegible], [illegible]
[illegible]
[illegible], [illegible]
[illegible]। [illegible], [illegible]
[illegible]
प्रमाण [illegible] प्रमाणम्।
[illegible]। [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]

ठासे परत्वंमत्, प्रथमं यदन्ठासभां तु ठामसमान्तपरु
तुपरसूक ठेन पांसमाति कं सामान्तुपक्रम, यष्ठास
मुउसुकु मुझे उत्रुपरापस्क्के यिष्टुउा माउ्न्संसामान्तुपउा
नवकुउ: कुष्टामके: मक्लिद्विपमद्व :परत्त्तुतामतर:॥
नवमकं यष्क्ठेरि पि मज्ञमव कुउा म विमस्वन्काहि याव
लेनउपप्वकुनादिति॥ ६ ॥ नवेकं वैसकाहि या॥
उउ क्षपिकेठा मसभूदया यमकुति याम्भूदय: कुठा
माम्रुठि ना क्षपि यकुकामकृति यां कतुं मिम्रीठव त्रिउ
दाकक्षुधा मियकुावपिवि उिनिकुमपवदउ॥ ॥प्र
थमीपप्रका मानां कुउमां मागीय पा॥ क्षविकुप
ठामभा मेक कादन्तवक्रुपी:॥ ॥प्रथम्वतिदिया:५
मीपक्षप्रता कृकू उमावलेकन मामकुपवलकु्न्या
मकृति यांनरुउवकु क्षामेवकं ठमाउकुसंमक्षकि उक्ष
नेविस्दउ, नउउाउ त्रियान्अक्ष दर्घाभ्रि मागाप
उिउानिषक्षु उंमिव कुउाउकुर भकुउ त्रियाकावीलि
उकुक्ष्ठ: काकुरलेदिउ कुतियं मिव लिङ्ग मिरक्षमा
वलेनविउ मलिलादराक्ष त्रियम्बिउ कु कुमाउ लवती
उ धीउलक्ष्ठ्नुज त्रियाकीति मिकु मकेउा त्रियाक
विङ्गम, यकुनरारुआनं मिमुलकामीमेउ, उउय
धामविदिषुल्नराठामामिक्षीठवउ, नदिकु पाठा
५३ठि मे मारुउाठामेनमि क्षीठवउ विदियाउ मपिवियउम
ल ११ क्षुपिउ: प्रथमीपप्रकामा क्षुधां मक्ष त्रियदकं माग
वक्षउमां कयदकं वक्षुउ मकादायथा नकुसीक्षुपा॥

विनश्यै स्वतन्त्रा आप्यल्लेदितकाव्रातुधां सख्रिदियमके
स्वलक्षणं तत्कृद्रागनूनविति सञ्जुः नित्यविधया प्रतिर्तमवि
सवनत्रियाग्नतिश्रीनतम ॥ १ ॥ नेत्रं वप्रदातॄणां प्रमाण
श्रुतिसारैरुदाहृताः, भिन्नं प्रमाणम्, प्रमन्नं प्रमा
णासमात्रेकादकारण्यन्दिनावानासि पितावसते, ततश्च प्र
मानसि प्रपूर्णानां सहेतुर्निमर्दिनानिर्वन्तुतरे पन्नेवप्रसङ्ग
ततसनकुं नृप दितुमादद ॥ ॥ तत्र विसिद्धेवत्तुनाका
दकारन्तुप्लुता ॥ ततस्त्वभावतानाक्तेप्रमाणेदेकतभङ्गः ॥
ततत प्रदातॄणां प्रमाणं विज्ञाने ञीत स्वभिन्नपिपद्मत्वक
ज्ञेयः । तथा हि सविसिद्धे यत्तु पिवत्तुनासिदसकाला
नासप्रस्वपिसानासैरसङ्कीलक्तेनसामात्रमा रत्नप्रवत
थापिसारवानासे यावज्जित्सानासैरविनाकृततनावेतानित्य
तिसत्ता नियमितश्रावत स्वतनामाक्षीकतैरवप्रमाणदेतं विज्ञ
यपदवीसवतरति, तथा सवत्तुनासङ्गुरकोदवाना सन
प्रसकारन्ताना सेनात्तथास्वनावतानासेना, स्वानाविक
वृत्तिरित्यादि, दः प्रतीयमाने विस्फुरैवसवदेवग्नतथा
प्रतीत नवनेकत्वात् श्राभ्यानाविकेपिस्यः स्वनवः प्रत्यक्ष
तसमयाद्भिप्राप्तौ तत्रथा, स्वयिसद्वराद्धत्वं पलडतप्र
तिपत्तिकाविकृसितैवमानि संपिनकप्रदेकान्दवनिज्ञीयत
तश्चद्विप्रमातृः नात्रिमनतरन्यवारुपन्यनामातृणीयकतया
सो वत्तुनास संविदितः, सर्वदेसकलागतत्वधर्मसंविति
तदत, तत्किंप्रमाणेतुरोन, तश्चतश्चयधीकृप्रत्यक्षसमयेन

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] [illegible]
[illegible] [illegible]
[illegible]

प्रमेयस्य सिद्धिं विदधाति, प्रमाणस्य प्रमातृस्वात्मनि
स्थितिं लभमानं सिद्धिरस्तु, विश्वविश्रान्तिं दिशत्परमेश्वर
प्रकाशैकात्म्यनिमित्ता। तथाहि प्रमितं हि तत्, यदिदं नील
पीतादिकं प्रमाणरूपं [illegible], तच्च [illegible]
[illegible] विषयं, [illegible] स्वविषयमात्र — कल्पते
विनिश्चिनोति, विकल्पान्तरं [illegible] प्रवर्तते।
सिद्धसिद्धि [illegible] उपपत्तिः। [illegible]
[illegible]
[illegible] ति, [illegible]
[illegible] प्रकाशस्य [illegible] स्वप्रकाशमात्र ॥
[illegible] स्वप्रकाशे किं प्रमाणेन, [illegible] प्रथमं स्वप्र
काशेन भवति, [illegible] प्रकाशमात्र
[illegible], यदि
मात्रे परमार्थतः [illegible] प्रकाशस्यैव [illegible]
[illegible] स्वप्रमातृ
मा भूत्, उच्यते। [illegible] प्रमातृ [illegible]
[illegible] कल्पनीयः। [illegible] मातृ
[illegible] प्रमातृ [illegible]
ति। [illegible] स्व
[illegible] प्रकाशस्य [illegible]
प्रकाश [illegible] ॥

[illegible]

[illegible]

२

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

ष्टा पातयान्तर्धाकृतमवस्थाकाचित् प्रतिबिम्बप्रायतया
तदुक्तं तत्त्वतः [illegible] सिद्धा काचित्तथा प्रथनं नामरू
[illegible] तदुक्तं शिवतत्त्वम् । सर्वत्र [illegible] पञ्च
[illegible]
[illegible] प्रतिमं विश्वं प्रतिबिम्बतया [illegible]
तथा प्रथनमीश्वरतत्त्वम् । [illegible] शिवतत्त्व [illegible]
[illegible] पतया [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ १ ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

स्तयैव नास्ति, तत एवं चैतत्त्रितयाः प्रतिप्रमातृभिन्ना
व, कस्मिंश्चिदपि मल्लप्रतीत्यादौ सर्वासु यासु कोऽपि य
दपि, न तु सा माया सा इति चेत्, किमपि नाविनष्ट
मुक्तमलस्य तत्, वक्ष्यते ॥ ७ ॥ यस्तु भिन्नभिन्न
प्रमेयसिद्धिः किल ॥ भवति, ततस्तु मेयं न स्यादिति ॥
इति विंशतितममेयं कल्पान्तरं तत्क्रमं, तथा
विभागतः प्रोक्तं प्रमाणं प्रलोकान्तरम् ॥ यस्माद
कारणं तु पं इति विंशतिप्रकारम् यस्तत्प्रलक्ष
तं कारणं, सर्वकारणकारणं विभागतः पं प्रमाणं
म, ततश्च मेयमिति सर्वतः । यदि मतं तत्र
प्रकृतीनां दिक्तत्त्वं कारणं प्रमाणं जीकं यदि
भिन्नात्मकं प्रमेयमपि संसारिणः प्रत्यभाषा
नमादिदिशा प्रमेयं भवति, तयस्तु मेयं कल्पाद
यस्तु प्रमेयाश्रयं प्रमाणं दर्शयाश्रयति, प्रमातृस
त्रिस्वकावकाशे, न प्रमेयत्वं तदावभासा यायाप्र
मातृत्वमिति प्रमेयप्रमुखाकाङ्क्षा नि ... वस्तुत
इत्थं प्रमातापि प्रमेयमेव, सतु प्रमातृतया
मात्रं ... प्रमेयताक र्वद ... ॥ ०. ॥
प्रकृति न चैतदयं विंशतिः किं कार्यं किं कारणमित्यस्य ...
१०.३ त्व ॥ इति विंशतिविधानं तत्त्वं ... वली,
कार्यकारण ... प्रबन्धः ... प्रमातुः

[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

प्रमातान्तर. यदेतं त्रिस्वरूपं पाशुपाख्यं ज्ञात्वा सत्त्वम्
संवेद्यत्वपदस्थपशुपद, स्वपवित्रं नटवत्ति, तेनात्मा
यमलानां विकल्पितैश्चैव विषयैस्तु, तथा
दीक्षापि स्वज्ञानिताविज्ञाता नास्ति निर्वाणदीक्षि
तः स्वपवित्रं स्वपशुपदत्वोल:, स्वतन्त्रवेद्यमिति
धुरा स्वप्नयत्नात् संधमामात्मत्रिस्वरूपसंवे
दनशक्तिः संवेद्यं स्वपशुपदलीनाः स्वल्पा
दत्वा यात्रिका कादिकार विधिमन्त्रं पदं तु पञ्चाया
कल्लोलाः संवेद्यं पशुत्वम् ॥ ३ ॥ नवं स्व
तत्त्वा पृथक्त्वं संसः स्वतीतः पुमन् स्वतः
मलस्य विषयाणां त्रितः। मायामलस्य स्वपाति
कत्वम्   त्वम् स्वपदात्पदार्थकर्मल
स्याप्यपि स्वत्वं मायाश्च मलस्य विषय
तोऽभ्युदयत ॥ ॥हि मानमपि कर्तृत्वलक्षणं
कार्ममलत्वतः ॥ त्रिस्वरूपं मायामलं वि
द्यतां स्वकृत ॥ यस्मि स्वभावात्तत्त्वपद्धतिः स्व
दभिन्नमपि कर्मलाभात्तत्र भूतभवस्व
रूपं चक्रत्वान्तं विद्यस्वराः ॥ किंतु तत्कार
तत्वानि ....

. . . .

संसारकारणम्, उक्तं विश्वं विश्वात्मकलाश्च
व्यक्तिः, [illegible] येषां [illegible] प्रलयाक-
लाश्च पि [illegible] भोगेनैव:॥ यदुक्तमा-
यां [illegible]
[illegible]
[illegible] तस्मात्
[illegible] संसारं [illegible] ॥
[illegible]
मतिः [illegible] संसारकारणम् [illegible] ॥
[illegible] तत्र
[illegible]
[illegible] संसार [illegible]
[illegible] कारणं, संसारस्य [illegible] पिका
[illegible]
५२८ ठि [illegible]
१०३ संसारकारणम्, [illegible]
[illegible] संसार [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

मतुष्णस्मैवत्तापद्व्यां संस्कृसम्नस्मिन्विश्वकृतुपेये
आदितिमतम्नरः, स्तुतं ठवउ, यनुपितुदतम
उतियेरष्टस्मिन्पुरा कात्पुषालीवतु ष्टवृत्तानस्मा
त्रपपतुस्तुषापिठम्नपसंदावठम्नविस्तादृष्ट
कष्टाम्नयेतुमये: सापम्नसाम्निवैम्निष्टे यया
म्नकप्यनस्वाद्विस्तात्कपमानमयतेवपा
म्नयतैवस्वखतुम्नतुसंस्कारतुपवा पवष्टि
ल्लासस्तुएवैहृवठमतुपष्टैम्नष्टविदुमानवा
म्नस्मिन्सापम्नस्मानिवैमिष्टुमितिदयतेवति ॥
यउमउ दैयतुयीयमितानि, ठावउस्त विस्व
मसीवस्तुपुरातोपानममनिम्नवृष्टानुपतयेवम
कल्पितुल्लामप्रवैसपुलायकुलावितृनाकेला
म्निवनमम्नस्मिन्तुपतुष्टुम्नसितामा यथि
उ । खतुमसम्नद्धंकं विस्तुंसस्तुः पुरा म्निसनु
यउति ॥ ३० ॥ श्लोकाः ॥ ०१३ ॥ ५उश्रीम
५२ष्ठि म्नसाम्नाठिनवतुपुविवम्नितायाभीस्वरपुष्टि
१००न तुयां पुउविमस्तिष्टामानसमा उठिकावतुनिउ ॥
पञ्चमं द्वितीयमाह्निकम् ॥ ॥

[illegible]

ननकालेनन स्वतु पन्थि पितेन: । कामं नदप्रा [illegible] स्वतु
नयति तुत्राम उतुल्य पन्था स्रोत न निम प्रा [illegible] वतेन
वसि नन्द्रा सांवतु [illegible] स्राद्ध नियतित वे स्वतु पूर्णास्य ति
तेभदवित्तु नीता सिन्नत्नुं नन्दा पराव्रन्धा [illegible] स्राद्ध ...
.... तद्धि यविषयदि
यषा [illegible] तकेतुत्र [illegible] काहा [illegible] पा उद्विय अपीय
नहते तु [illegible] भदस्य विषय [illegible] वसानद [illegible] न केन [illegible]
नकेत सिनन्दा नीतित ॥ ० ॥ ननयतु [illegible] वायं भदस्व
स्तु प तु [illegible] केतु दिवेतु यनवसि [illegible] नायाय [illegible] उत
संन्नाद ॥ ॥ उतस्य [illegible] कंनागवतु [illegible] सिदादकेतु
ना ॥ [illegible] परमाभव पनंतित भदनन उत ॥
उतेवस्राद्ध सिभद [illegible] उतसि [illegible] कासतु पश्राद्ध
[illegible] । उतेवपरम [illegible] स्राउतुनाता वेतु [illegible]
[illegible] नत नंतना तु [illegible] यन्न उतुति [illegible]
पत्रि सिन्नतुया वकुंत [illegible] वतु [illegible] तया सय [illegible]
१००५ सिन्नसाका तितुवा पूठवितु [illegible] ना [illegible]
वन परामसा तस्मतं [illegible] काति । [illegible] नवतितं [illegible]

स्फुरत्तावविद्भूतयः प्रकाशितयस्तुविमर्शतत्त्वस्फुरति
त् स्वरूपत्वप्रकाशमानापरिच्छिन्नत्वरूपतत्त्वस्तुत्या
पिविमर्शनं स्वरूपप्रकाशमानत्वविश्रान्तसदाशिव
त सदाशिवेश्वरपरमार्थम् सत्यगतं मायाप्रसृतिः
तत्त्वाभिमुखः सत्यतत्त्वं तेमनि स्फुटः स्व
प्रापरिच्छिन्नतेति तत्त्वं तत्त्वं यास्तु सर्वं
नन्वं प्रकाशविमर्शतत्त्वं पर्शः प्रकाशः प्रका
शप्रकाशो प्रकाशस्फुरत्तास्ति स्वापरत्व
... प्रकाशस्य यानियमशीलानि सत्य
... ॥ २ ॥ तत्त्वं सति यथापरमार्थ
... तत्त्वं विकल्पः सत्यत
... सत्य ... प्रसन्ततेति
... तत्त्वं ... सितम्
सर्वं समयति॥ ॥ ... सत्तः स
... ॥ ... तत्त्वं ...
रूपरि ... सिनाम ॥ ॥ सत्यं तत्त्वं
प्र टि ... तत्त्वं ... विमर्शतः ॥
९००१ तत्त्वमस्ति ... प्रकाश ... नेमनिकं तत्त्व
विषयं प्रकाशमानात्मरूपं सत्त्वमस्तु स्वपि

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

पत्रे २६५ ४५०३



